ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25 | अक्तूबर - I - 2023 | अंक - 13 | माउण्ट आबू | Rs.-12

रायपुर में ब्रह्माकुमारीज़ की वार्षिक परियोजना 'सकारात्मक परिवर्तन वर्ष' का राष्ट्रपति ने किया शुभारंभ... राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि विशिष्ट लोग हुए शामिल

समस्त मानवता के कल्याण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का कार्य सराहनीय : राष्ट्रपति मुर्मू

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ की वार्षिक परियोजना 'सकारात्मक परिवर्तन वर्ष' का शुभारंभ करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं। मनुष्य की सोच और व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए ऐसे कार्यक्रम शुरू कर यह संस्थान बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। मैं इसके लिए संस्था को बधाई देती हूँ। राष्ट्रपति ने कहा कि आजकल बच्चे आर्टिफिशियल इंजीनियरिंग की बात कर रहे हैं लेकिन यह भी ज़रूरी है कि दिन का कुछ समय मोबाइल से दूर रहकर बिताएं। साइंस और टेक्नोलॉजी के साथ आध्यात्मिकता को भी जोड़ें तो जीवन आसान हो जाएगा। ज़िंदगी को कैसे सफलता से जीयें, किस तरह सुख से जीवन जीयें, इसका रास्ता बहुत सरल है। हम केवल एक शरीर नहीं हैं। हम एक आत्मा हैं। परम पिता परमात्मा के हम वंशज हैं। इसलिए हमें कभी खुद को कमज़ोर नहीं समझना है। हम शक्तिशाली हैं, इसी दृढ़ विश्वास के साथ सकारात्मक कार्य करते रहिये। ऐसे लोगों के साथ रहिये जो आपको सही रास्ता दिखा सकें। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में शांति के लिए कार्य कर रहा है। यह संगठन दुनिया को बेहतर बनाने में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। छत्तीसगढ़ में ब्रह्माकुमारीज़ ने जो काम आरंभ किया है मैं उसके लिए संस्थान को बधाई देती हूँ। स्वर्णिम युग का स्वप्न जो हम देख रहे हैं रामराज्य के लिए, तो हमें राम बनना होगा, सीता बनना होगा। इस अवसर पर राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल विश्वभूषण हरिचन्दन और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शॉल और मोमेन्टो भेंटकर स्वागत किया गया। प्रारम्भ में नगर के बाल कलाकारों ने 'जश्न का महारास' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने किया। इस अवसर पर कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. सविता दीदी, ज्यूरिस्ट प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. नथमल भाई, शिक्षाविद प्रभाग की एडिशनल डायरेक्टर ब्र.कु. लीना बहन, ब्र.कु. आशा बहन,भिलाई, मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ अधिकारी और नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे और इस कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामनाएं दी।

कठिनाइयों के दौर में इस संस्थान ने मुझे सही रास्ता दिखाया : द्रौपदी मुर्मू

यह युग विज्ञान का युग है। अभी के बच्चे बहुत शार्प माइंड के होते हैं, किन्तु उनमें थोड़ा धैर्य कम होता है। इस दिशा में अध्यात्म उनकी मदद कर सकता है। हमारे ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सदस्य बरसों से इस दिशा में काम कर रहे हैं। मेरी आध्यात्मिक यात्रा में भी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने मेरा बहुत साथ दिया। जब मेरे जीवन में कठिनाई थी तब मैं उनके पास जाती थी। ब्रह्माकुमारीज़ का रास्ता मुझे बहुत अच्छा लगा। आप भी ये सीखकर सहजता से काम करते हुए अपनी ज़िंदगी को बेहतर तरीके से जी सकते हैं। यहां ज़िंदगी जीने की कला सिखाई जाती है।

सकारात्मक सोच से किसी भी चुनौती का सामना करना संभव...राज्यपाल

राज्यपाल विश्वभूषण हरिचन्दन ने कहा कि सकारात्मक सोच अपनाकर हम दुनिया की किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। उन्होंने शुभकामना व्यक्त की कि सकारात्मक परिवर्तन का यह वर्ष सभी के जीवन में सुखद बदलावों का साक्षी बने, समाज खुशहाल रहे तथा हमारा देश हर तरह से समृद्ध हो। सकारात्मक परिवर्तन का मतलब ऐसे परिवर्तन से है जिसका लाभ व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को हो। जब कोई समाज सकारात्मक बदलाव को अपनाता है तब वह और अधिक मज़बूत हो जाता है। बस हमें परिस्थितियों के अनुसार ढ़लना आना चाहिए। मैंने देखा है कि ब्रह्माकुमारीज़ में दूसरों को बदलने की बजाय स्वयं परिवर्तन पर ज़ोर दिया जाता है जो सराहनीय है। मुझे लगता है कि ये संस्था आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के कार्य में सकारात्मक भूमिका निभा सकती है। यह संस्था नशा मुक्ति के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य कर रही है। बस्तर जैसे सुदूर इलाकों में आदिवासियों को दिव्य ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर व्यसनमुक्त बनाने का कार्य सराहनीय है। जो यह सिद्ध करता है कि ध्यान, योग आदि की शिक्षा देकर अच्छे संस्कार पैदा किये जा सकते हैं।

नई दिल्ली। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के अति.महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई व अन्य।

नई दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ के अति.महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई तथा ब्र.कु. हुसैन बहन।

संस्थान का आध्यात्मिक मार्गदर्शन सदा ही मिलता रहा है...मुख्यमंत्री

माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि राष्ट्रपति जी का आगमन छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए बहुत ही गौरव का क्षण है। उनकी इस यात्रा के लिए छत्तीसगढ़ के तीन करोड़ नागरिकों की ओर से धन्यवाद है। पूरे देश की मुखिया के आगमन से छत्तीसगढ़ के लोग विशेष आत्मीयता का अनुभव कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कोई अपना, अपने ही घर आया है। यह बड़ा ही शुभ अवसर है कि रक्षाबंधन के समय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सकारात्मक परिवर्तन वर्ष का शुभारंभ हो रहा है। सामाजिक और आध्यात्मिक परिवर्तन की दिशा में इस संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों में मैं यथासंभव भागीदार बनने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ। छत्तीसगढ़ प्रदेश की नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों के संचालन में ब्रह्माकुमारीज़ का आध्यात्मिक मार्गदर्शन हमें सदा ही मिलता रहा है।

कलम दिखता है वहां तक ही न रुके... लेकिन जो देखना है वहां तक बढ़ायें

मीडियाकर्मी एक ऐसा प्रबुद्ध वर्ग है जो ज़िन्दगी की दशा और दिशा तय करता है। हमारी रचना आम मनुष्य के लिए भोजन की तरह है। हमारे हर शब्द में एक वायब्रेशन है जो हरेक पाठक तक पहुंचता है। शब्दों के पीछे हमारा इंटेंशन, भाव भी उनके दिलों को छूता है। इसीलिए हम कैसा समाज चाहते हैं, समाज को हम कैसा देखना चाहते हैं, ये हमारी रचना पर निर्भर है। इसलिए रचना रचने वाला मानसिक व शारीरिक दोनों रूप से संतुलित व स्वस्थ होना ज़रूरी है। तभी हम समाज को वैसा ही बना पायेंगे।

पहले की पत्रकारिता जीवन से जुड़ी हुई पत्रकारिता थी। यानी कि जीवन ही प्रोफेशन था। किसने लिखा है, किसने कहा है, उस आधार से प्रोफेशन था। जैसे कि लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, ये सब उसी का उदाहरण है। जैसे गांधी बोलते ही हम अहिंसा से जुड़ जाते हैं, मदर टेरेसा कहते ही हमें दया और करुणा याद आ जाती है और शिवाजी का नाम लेते ही शौर्य के वायब्रेशन आते हैं। माना कि उनका जीवन ही पर्याय था। कहने का भाव यह है कि प्रोफेशन में पर्सनालिटी की झलक दिखाई दी। और उससे आम मनुष्य को उसी तरह जीवन बनाने का जज़्बा पैदा होता था, हिम्मत पैदा होती थी। और वो भी वैसा ही करने लगता जैसे सकारात्मकता के बीज उसमें पड़ते।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

आज समय की मांग है कि पर्सनालिटी ही प्रोफेशन बने। आज एक पत्रकार की जीवनचर्या को देखें तो वो सुबह से शाम तक दौड़ता-भागता, इन्फॉर्मेशन कलेक्ट करने में ही थक जाता है। परिणामस्वरूप रात देर तक अपने कार्य को निपटाने में ही उसका जीवन बीतता है। देर से सोना, देर से जगना, ये उनके जीवन का हिस्सा बन गया है। इसके चलते आज व्यवस्था भी वैसी ही बन गई है। बनाई भी तो हमने ही है ना! अगर हम उसको परिवर्तित करना चाहते हैं तो पहल भी हमें ही करनी होगी।

हम बात करना चाहते हैं कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए सकारात्मक मीडिया होना ज़रूरी है। हम सोचते तो हैं कि सकारात्मक होना चाहिए लेकिन उसका आरंभ कौन और कैसे करे, ये भी प्रश्न हमारे सामने आता है। आज हम जबकि सारे समाज और देश को सोच व दिशा देने वाले हैं तो बीड़ा हमें ही उठाना पड़ेगा। हम कैसा समाज देखना चाहते हैं, इसपर हमारा फोकस हो। न कि जो दिखता है उसपर। हम सुबह से शाम तक जो दिखता है हमारे आस-पास, उसे ही हम प्रकाशित करते हैं। पर हम समाज को जैसा देखना चाहते हैं, उस तरफ हमारा ध्यान बहुत कम है। होना उल्टा चाहिए ना! सशक्त मीडियाकर्मी के लिए सबसे पहले मीडिया धारक को स्वयं को सशक्त होना पहली शर्त है। अगर हम पंद्रह, बीस, पचास साल पीछे के इतिहास के पन्नों को देखें तो हमारे पूर्वज सुबह जल्दी उठते थे और शाम को जल्दी सोते थे। और वहां शांति और सुख दोनों ही ज़्यादा थे आज की तुलना में। किंतु आज हमारे पास साधन सुविधाएं तो बढ़ी लेकिन शांति छिन गई। दुनिया की दूरी तो कम हुई लेकिन दिल की दूरियां बढ़ गईं। इसे हमें ठीक करना है।

इसके लिए सबसे अच्छा समय ब्रह्ममुहूर्त को माना गया है। ब्रह्ममुहूर्त में सारी रुकावटें, सारे मन-मस्तिष्क शांत मुद्रा में होते हैं, न कोई कर्म की खींच है और न कोई शोर। ऐसे समय में हमारा ब्रह्माण्ड की ऊर्जा के साथ जुड़ना बहुत सहज होता है। हम उस परमस्रोत परमात्मा के साथ जुड़ते हैं और अपने को सकारात्मक ऊर्जा से भर लेते हैं। फिर इसका हम अपने प्रोफेशन में उपयोग व प्रयोग करें।

जिससे हमारी कलम से वो रचना होगी जैसे हम समाज को बनाना चाहते हैं, देखना चाहते हैं। हम सब चाहते हैं कि समाज में खुशहाली हो, हर चेहरे पर मुस्कान हो, उसके लिए सकारात्मक ऊर्जा हर शब्द में हो। और वो वायब्रेशन हमारी हर एक रचना से आनी चाहिए। तभी तो हम सुस्वस्थ और श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकेंगे और आने वाली पीढ़ी को एक सही दिशा देने में कामयाब होंगे।

सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख साथ रखो

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

कईयों के पास सूक्ष्म में माया आती है, संकल्प, विकल्प बहुत आते हैं। माया के आने का कारण है बाबा से प्रीत में कमी। जब हमारा नया जन्म, नया बाप, नई माँ, नई पढ़ाई, नया ऑक्यूपेशन सब नया-नया है- फिर हम यह क्यों कहते हैं कि पुराना संस्कार है! क्यों पुराने को मारा नहीं है क्या? पुराना माना साँप, साँप को ज़िन्दा रखेंगे तो फूँक तो मारेगा ही। हमें पुराना क्यों सोचना चाहिए, क्या करें - यह मेरा पुराना स्वभाव है ना! हमने कभी ब्रह्मा बाबा के मुख से यह शब्द नहीं सुने जो बाबा कहे मेरा पुराना संस्कार है। हमने कभी नहीं देखा कि बाबा में कोई पुराना संस्कार है। रात-दिन बाबा के संग रहे, पुराना स्वभाव-संस्कार-संकल्प क्या होता, यह कभी हमने नहीं देखा, इसीलिए आज पहले हम सब इस बात का संकल्प करें कि पुराना संस्कार मर गया। हमारा संस्कार नये ब्राह्मण जन्म का है।

सवेरे उठते हैं तो उठते ही बाबा सामने आता है या पुराना संस्कार सामने आता है? पिछले जन्म को मार कर उसका श्वास भी निकाल दो। पुराना संस्कार कहते हो माना अभी तक श्वास रखकर पालना करते हो, साँप को दूध देते हो कि हे साँप तू दूध पी और फूँक मार। क्यों कहें पुराना संस्कार है, जन्म नया, परिवार नया, पढ़ाई नयी, हमें जाना नयी दुनिया में है, सेवा हमारी नयी, फिर हम पुराना-पुराना क्यों पालकर बैठे हैं? पुराने संस्कार को मारें, तब ब्राह्मण जन्म का सुख ले सकेंगे।

कई चलते-चलते थक जाते हैं लेकिन हमारा बाबा कभी थकता है? तो हम भी बाबा जैसे अथक क्यों नहीं बनते हैं! इसके लिए टाइम पर सोओ, टाइम पर उठो तो थकावट की बात ही नहीं। लेकिन थकावट तब होती है जब दिलशिकस्त होते हो, अलबेले होते हो। तो न हमें अलबेला होना है, न सुस्त होना है। सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख साथ रखो।

> कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो।

अपनी मौज-मस्ती में रहो। कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। जैसे इस कान में पानी पड़ा है तो यहाँ से ही निकालेंगे ना! ऐसे ही यहाँ से सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। यहाँ की बात फालतू यहाँ तक भी क्यों घुमायें। उसे निकालने के लिए क्यों टाइम वेस्ट करें, यह भी रॉन्ग है।

हमारे लिए ऐसी कोई घड़ी न आवे जो हैरानी महसूस हो। मैं आज हैरान हूँ, परेशान हूँ, अब इस भाषा को समाप्त कर दो। न ऐसी कोई बात सुनो, न हैरान हो। किसी की फालतू बातें न सुनो, न उसका चिंतन करो। हाँ, किसी का मन भरा हुआ है तो जिसकी ड्यूटी है उसके पास जाकर सुनाके मन को हल्का करो। परन्तु ऐसे नहीं कि आपने दिल हल्की की और मैंने वह बात सुनकर दिल भारी कर ली। नॉट एलाऊ, इसलिए हमें न भारी होना है, न किसी को भारी करना है। न कभी मन को भारी रखना है। बात आई सेकण्ड में समाप्त हुई। इसी को कहा है ड्रामा की बिन्दी लगाना सीखो - इसकी विधि है ड्रामा, बिन्दु। बातें आयेंगी परन्तु आयी, गयी। अभी इन सभी बातों से हमें मुक्त होना है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कम्बाइण्ड स्वरूप को यूज़ करो तो सदा विजयी बन जायेंगे

बाबा प्रश्न पूछता है, मेरे बच्चे आप खुश रहते हो? दूसरा प्रश्न यह होता- सदा खुश हो या कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा खुशी होती है? बाबा कहते भगवान के बच्चे वो सदा खुश नहीं रहेंगे तो कौन रहेंगे? क्या है कि कभी-कभी बाबा-बाबा शब्द बोलते भी थोड़ा हल्का हो जाता है। बाबा भगवान है, उसके हम बच्चे हैं। अगर भगवान के रूप में बाबा की स्मृति सदा रहे तो खुशी न रहे, यह हो ही नहीं सकता क्योंकि इस ब्राह्मण जीवन में खुशी अविनाशी ज़रूरी है क्योंकि अविनाशी बाबा की देन है।

बाबा सर्वशक्तिवान है, हम कभी-कभी किसी भी शक्ति में मानो कमज़ोर हो जाते हैं, तो हम सोचते हैं हमारे से यह समस्या हल होना बहुत मुश्किल है। कभी-कभी अलबेले भी हो जाते हैं और कभी-कभी दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। तो बाबा कहते हैं आप में कोई भी शक्ति की कमी है लेकिन मैं जो कम्बाइण्ड हूँ वो तो सर्वशक्तिवान हूँ ना। समय पर सहयोग, वरदान और मदद देने के लिए बाबा कम्बाइण्ड है। तो जो कम्बाइण्ड सर्वशक्तिवान बाबा है, उसकी मदद क्यों नहीं लेते? उस समय क्यों नहीं बाबा को याद करते? और बाबा आया ही है- हिम्मत की मदद देने के लिए, एक कदम आपके हिम्मत का और हज़ार कदम बाबा की मदद के हैं क्योंकि बाबा सर्वशक्तिवान है लेकिन होता क्या है? माया भी बहुत होशियार है, उसी समय हमको अकेला कर देती है। बाबा को भुला देती है और अकेले होने के कारण विजय होने के बजाय कहाँ-कहाँ हार हो जाती है।

तो ध्यान पर रहे कि माया पहले अकेला करेगी लेकिन मुझे अकेला होना नहीं है। सदा बाबा के साथ कम्बाइण्ड रहना है, हम कहें बाबा मेरे साथ है, तो साथ वाला थोड़ा किनारा भी हो सकता है लेकिन कम्बाइण्ड तो सदा ही साथ है। तो बाबा का वायदा अगर आपने दिल से याद किया, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा तो हज़ूर हाज़िर है। लेकिन एक बाबा के संकल्प के बिना और कोई संकल्प नहीं आवे तब बाबा मेरा है। हम कहते हैं भगवान मेरा है, जहाँ भगवान है वहाँ विजय तो है ही। एक बाबा ही भगवान है और वो हमें मिल गया, इसी निश्चय के खुशी और मस्ती में रहना चाहिए क्योंकि भगवान ने जो कहा वो तो होना ही है।

अभी तो ज़्यादा मेहनत करने की ज़रूरत नहीं है, अभी तो ज्ञान इतना स्पष्ट हो गया है और बाबा एक ही शब्द कहता है जो ब्रह्मा बाबा ने किया उसको फॉलो करो। दिनचर्या का भी बता दिया कि सुबह को कितने बजे बैठो, कैसे बैठो तो उसी विधि से बैठना है। फिर मुरली भी ऐसे सुनना है जो अर्जुन समान गीता ज्ञान सुनते-सुनते जैसे कि मन्त्र-मुग्ध स्थिति हो जाये। बाबा मेरे लिए आया है और मुरली द्वारा मेरे से बात कर रहा है, मेरे को पढ़ा रहा है, जैसे मेरा बाबा है, वैसे मेरा टीचर है, मेरे लिए आया है यह नशा होना चाहिए। फिर सिर्फ कर्मकर्ता नहीं, कर्मयोगी बन करके कर्म करो। कर्म और योग दोनों साथ-साथ हों। कर्म में परमात्मा पिता की याद होने के कारण जो भी कर्म करेंगे उसमें सफलता हुई पड़ी है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है, जैसी स्थिति वैसे कर्म होते हैं।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

स्वयं को इन तीन बीमारियों से बचायें...

बच्चे को पहले माँ-बाप का प्यार मिलता है फिर जब बड़ा होता है तो दुआयें मिलती हैं। बाप के प्यार ने बच्चे को दुआयें लेने के पात्र बनाया। फिर ज्ञान सागर के रूप में पढ़ाया- "हू एम आई"। जब तक किसी को आत्मा की फीलिंग नहीं आई, तब तक जैसे उसका जन्म ही नहीं हुआ। परमात्मा कह रहा है तुम आत्मा हो, तो शरीर से डिटैच हो जाते हैं क्योंकि वह पुर्नजन्म से न्यारा है तो उसके कहने में ताकत है। जो देह के सम्बन्ध से न्यारा है वह मेरे से बात करता है, दृष्टि देता है, घर की याद दिलाता है। मैं भगवान के सामने हूँ, यह सोचते ही खुशी आ जाती है। यह दुनिया पुरानी, पराई, छी-छी है। मैं आत्मा बाबा की हूँ तो अनेक जन्मों के विकारी संस्कार खत्म हो गये। अभी तक पुराने विकारी संस्कार छोटे-मोटे तूफान ले आते हैं, रूठने का भी संस्कार है। शक्ल चेंज हो जाती है। भाग्यवान कभी रूठता नहीं है। वह बाप को देखता है तो नशा चढ़ता है। उल्टे नशे वाला रूठता है। मैंने ये सेवा की, मैंने यह किया, कोई पूछता नहीं है। फिर खाना भी अच्छा नहीं लगता, नींद भी अच्छी नहीं आती है। सुल्टा नशा, नारायण बनने का नशा, लक्ष्मीपति, प्रकृति का पति यह नशा रहता तो वह लक्षण आयेंगे। ईश्वर की सन्तान हूँ, वर्से में भगवान के गुण आते जायेंगे। भगवान भी खुश होकर बच्चे को वर्से में सब गुण दे देता है।

भगवान ने इतना सबकुछ दिया है तो कितनी खुशी मेरे पास है! खुशी की खुराक खाओ तो चिन्ता करने का मर्ज छूट जाये। चिन्ता वाले को नींद भी ठीक से नहीं आती है। जिनके संग में रहते हैं, उसके संग का भी फायदा नहीं ले पाते हैं। कहेंगे मेरा कोई भी नहीं है। अरे खुशी में रहना है, अकेले हूँ तो भी खुश हूँ, सबके साथ हूँ तो भी खुश हूँ। वो खुश रहने वाला मजबूत बन जाता है। हमें बाबा का सच्चा, पक्का बच्चा बनना है। कोई भी परीक्षा आये, हम पक्के रहें।

याद को सहज बना दो, थक मत जाओ। थकने से याद नहीं ठहरती। एक है थकने की बीमारी, दूसरी है चिन्ता की बीमारी, तीसरी है रूठने की बीमारी। सब बीमारियों की दवा एक है- बाबा की याद। याद में रहने से बीमारी भाग जाती है। यात्रा पर भावना से जाते हैं तो थकते नहीं है, उनको पक्का है अन्त तक पहुंचना है, वापस नहीं जाना है। भले पतले हो जायेंगे, बीमार हो जायेंगे, पर वापस नहीं जाना है। यहाँ भी जो वापस पुरानी दुनिया को देखते या पीछे मुड़कर देखते हैं तो थकते हैं, फिर सांस चढ़ता है, फिर हिम्मत हार खिला देती है। विजयी माला में आने वाला अच्छी सेवा करता, अच्छा पुरुषार्थ करता। वह कभी किसी की कम्पलेन नहीं करता है, उसकी भी कोई कम्पलेन नहीं करता है। अशरीरी बनने का अभ्यास, बाबा के प्यार की शक्ति और घर की याद तीनों इकट्ठी चाहिए। सेकण्ड में डिटैच हो जाओ।

बाबा खुद कहता है मंज़िल ऊंची है, टाइम लगता है। फिर बाबा कहता बच्ची सेकण्ड लगता है। माया टच करती है सेकण्ड में, टच किया बस मुरझा गये। माया को सेकण्ड लगे और मुझे बाबा का बनकर मुस्कुराने में सेकण्ड न लगे! माया के पास पूरा प्लैन है हमको हार खिलाने का। बाबा हमको प्रैक्टिस कराता जीत पहनाने की। हम पहले से रेडी हैं, अस्त्र-शस्त्र तैयार हैं। अन्दर ही अन्दर अपनी घोट तो नशा चढ़े।

दिल्ली-हरिनगर। राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू को ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विसेज़ विंग की ओर से एसएसडब्ल्यू मोमेंटो भेंट करते हुए विंग की वाइस चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. सारिका बहन, रिटा. कर्नल सती तथा कैप्टन शिव।

जीवन में कुछ करने का एम अवश्य रखें

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

अपने आपको देखना चाहिए कि मेरे में क्या विशेषता और योग्यता है जिससे कि मैं अधिक से अधिक सेवा कर सकता हूँ। हम शुरू से जो कर रहे हैं वही करते रहें, जहाँ बैठे हैं वहीं बैठे रहे- इसका अर्थ है हमारे जीवन में प्रगति नहीं है। इसका नाम सन्तुष्टता नहीं है।

बाबा का यह महायज्ञ सारे विश्व को शान्ति देने वाला है। स्वयं रुद्र का रचा हुआ है। ऐसे यज्ञ का जो मूल कुण्ड है, स्थान है उसके हम ब्राह्मण हैं। इस महायज्ञ में रहने वाले सब ब्राह्मण अपना सब कुछ स्वाहा किये हुए हैं। उनका अपना कुछ भी नहीं है। यज्ञ में भी यही कहते हैं कि यह अग्नि के लिए है, मेरा नहीं है; यह जल के लिए है, मेरा नहीं है इत्यादि। वैसे हमारा भी कुछ नहीं है, जो कुछ भी है वह बाबा का है। यह भावना हमारी रहे कि हम वो ब्राह्मण हैं जो हथियाला बाँधे हुए, तिलक लगाये हुए हैं, तो हमारी स्मृति में रहेगा कि हमारा क्या कर्त्तव्य है। सारे विश्व को हमें बाबा का सन्देश देना है। इसलिए हरेक को यह याद रहना चाहिए कि मुझे भी इस ईश्वरीय सेवा की ज़िम्मेवारी लेनी है। अपने आपको देखना चाहिए कि मेरे में क्या विशेषता और योग्यता है जिससे कि मैं अधिक से अधिक सेवा कर सकता हूँ। हम शुरू से जो कर रहे हैं वही करते रहें, जहाँ बैठे हैं वहीं बैठे रहे- इसका अर्थ है हमारे जीवन में प्रगति नहीं है। इसका नाम सन्तुष्टता नहीं है। यह तो अपने आपको तसल्ली देना है कि जो है वो ठीक है, जितना है उतना ठीक है। कोई कहता है कि काहे को झंझट में पड़ना, मुझे जितना मिला है, उतना करते चलें।

एक आदमी आम बेचता था ठेला लेकर। बेचता रहा, बेचता रहा वर्षों तक। किसी ने कहा, भाई इतने वर्षों से तुमको देख रहा हूँ, ठेले में ही आम बेच रहे हो। आगे और काम नहीं करने का है क्या? वह कहता है, और क्या काम करूँ? मैं तो यही काम जानता हूँ। उसने कहा, ठीक है, तुम यही काम करो लेकिन इसी काम में आगे तो बढ़ो। वह पूछता है, क्या आगे बढ़ूँ? उसने कहा, पैसे इकट्ठा करके अपने व्यापार को बढ़ाओ। इससे तेरे नीचे कई लोग काम करेंगे, जगह-जगह पर तुम्हारी दुकानें होंगी। तुम एक बड़े व्यापारी हो जाओगे। यह ठेला लेके ऐसे ही घूमता रहेगा क्या गली-गली में सारी उम्र? वो कहता है ठीक है, मेरे आदमी हो जायेंगे, दुकानें हो जायेंगी, पैसा होगा फिर और क्या होगा? उसने कहा, तुम बड़ा बनेगा, सेठ कहलायेगा? उसने कहा, फिर क्या होगा? वैसे पूछता गया। आखिर उसने बोला, तुम सुख से रहोगे। तब ठेले वाले ने कहा, अरे भैया, सुख से मैं अभी भी रहता हूँ। उसी सुख के लिए इतने सारे झंझट में क्यों पड़ना है? फिर व्यापार बढ़ गया तो फुर्सत कहाँ मिलेगी? अभी इस ठेले से ही मैं सुखी हूँ, मैं जहाँ खड़ा हूँ वहीं ठीक हूँ।

बड़ा होने के लिए कुछ करना पड़ता है। हरेक में कई विशेषतायें हैं। यह पक्की बात है। मैं देखता हूँ, हरेक में विशेषतायें हैं, लेकिन हम उनको ठीक ढंग से प्रयोग में नहीं ला रहे। बाबा का हरेक बच्चा बहुत बुद्धिशाली है, प्रतिभाशाली है। हम अपनी योग्यता से कुछ न कुछ सेवा करें। यह ख्याल रखें कि अपनी प्रतिभा को किसी न किसी सेवा में प्रयोग करते चलें। बाबा ने कहा है कि रोल और गोल को याद रखो। गोल तो सबका एक ही है, देवी या देवता बनने का लेकिन रोल हरेक का अलग-अलग है। अभी का रोल तो ठीक है लेकिन आगे का तो सोचो। जीवन में कुछ एम तो होना चाहिए कुछ करने का!

आगरा-शाहगंज(उ.प्र.)। योगेंद्र उपाध्याय,राज्यमंत्री,उच्च शिक्षा,विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी,इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. प्रीति उपाध्याय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दर्शन बहन, ब्र.कु. प्रीति बहन, डॉ. जी.पी. सिंह एवं विशन भाई।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। पूर्व कृषि मंत्री सह नगर विधायक डॉ. प्रेम कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।

नेपाल-काठमाण्डू। नेपाल के सम्माननीय उपराष्ट्रपति रामसहाय प्रसाद यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए नेपाल स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी।

राँची-झारखण्ड। राज्यपाल महोदय सी.पी. राधाकृष्णन को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। ठाकुर जयवीर सिंह,कैबिनेट मंत्री,संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय,उ.प्र. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीतांजलि बहन। साथ हैं ब्र.कु. अंकिता बहन, ब्र.कु. वंशिका बहन, जैनुलाब्दीन जी तथा अन्य।

वैर-भरतपुर(राज.)। पी.डब्ल्यू.डी. राज्यमंत्री भजनलाल जाटव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. संस्कृति बहन।

कोटा-राज.। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उर्मिला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति बहन व अन्य।

नई दिल्ली। किरेन रिजिजू,मिनिस्टर ऑफ अर्थ साइंसेज़ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. निकिता बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य।

नई दिल्ली। डॉ. एस.जयशंकर,मिनिस्टर ऑफ एक्टर्नल अफेयर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी।

नई दिल्ली। राजनाथ सिंह,मिनिस्टर ऑफ डिफेन्स को रक्षासूत्र बांधने के साथ ही आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. फाल्गुनी बहन।

नई दिल्ली। पीयूष गोयल,मिनिस्टर ऑफ टेक्सटाइल्स,मिनिस्टर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री एंड मिनिस्टर ऑफ कन्ज़्यूमर अफेयर्स,फूड एंड पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निकिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. फाल्गुनी बहन।

पटना-बिहार। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ कंकड़बाग सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन।

लखनऊ-उ.प्र.। राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा दीदी। इस मौके पर ब्र.कु. मंजू दीदी एवं ब्र.कु. शिक्षा बहन भी मौजूद रहे।

मोहाली फेज़ 7-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन सेवाकेन्द्र में पब्लिक प्रोग्राम के पश्चात् जगमोहन सिंह कांग,पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी,सह संचालिका,राजयोग सेवाकेन्द्र,मोहाली सर्कल।

ज़रा सोचें...

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

हमें स्वयं को सिखाना है कि सब अलग-अलग हैं, वैराइटी हैं। सबमें कुछ खूबियां हैं तो कुछ कमियां। इसे स्वीकार करें और अपने को उससे सेफ करते हुए आगे की ओर बढ़ते चलें- जहाँ हमें जाना है, जहाँ पहुंचना है। हमें परफेक्ट बनने के लिए सबकी खूबियों को और विशेषताओं को देखते हुए सम्पूर्ण व सम्पन्न बनना है।

वर्तमान में न उलझो रहें जहाँ जाना है उसकी तैयारी में लग जायें

बाबा कहते हैं ना तुम्हारा लक्ष्य है कि अन्त में एक बाबा की याद रहे। अब जीवनभर जो बातें याद करेंगे, वही अन्त में याद आयेगा। तो जीवनभर कौन-सी बातें हम याद करते है, देखो अपने आपको। ज्ञान-योग तो रोज़ करते हैं पर अन्दर से हमारी लगन, अटेंशन, अटैचमेंट कहाँ है? तो जिस परिवार के साथ हमें दिन-रात उठना है, बैठना है, रहना है, खाना है, जीना है, अवस्था तो वहाँ ही बिगड़ती है ना ज़्यादा! दूसरे तो अच्छे ही लगते हैं ना! उनके साथ कहाँ दिन-रात उठना-बैठना है, हर कोई सोचता है, उसका पति बहुत अच्छा है, वो कहेगा उनकी बीवी बहुत अच्छी है। मेरे ही बच्चे ऐसे हैं, अब वो सोचती उनको क्या पता, मैं ही जानती हूँ कि वो कैसे हैं। तो अवस्था वैसे तो अच्छी ही रहती है, बिगड़ती कहाँ है? आपसी सम्बन्धों में, घर-परिवार की और नौकरी-धन्धे की बातों में। तो वहाँ ही हमें लक्ष्य रखना है, अटेंशन रखना है कि जो हमें मिले हैं, बिना वजह तो कोई नहीं मिला है। बाबा कहते हैं ना, कार्मिक अकाउंट से ही मिले हैं। सोचते हैं, मिले तो मिले फिर मत मिलना और कोई जन्म में। क्यों? हमारे अपने हिसाब से मिले हैं। हम सिर्फ उस व्यक्ति को देखते हैं ना कि ये ऐसे हैं, ये वैसे हैं। हम भूल जाते हैं कि हम खुद भी कैसे हैं? हमें भी कोई सहन कर रहा है। हमसे भी कोई एडजस्टमेंट कर रहा है। क्योंकि हम भी परफेक्ट नहीं है ना! मैं भी परफेक्ट नहीं हूँ। तो मैं दूसरे के लिए कैसे सोच सकती हूँ कि ये ऐसे हैं, वैसे हैं। हम भी तो कुछ हैं ऐसे टेढ़े-मेढ़े।

सेल्फ रियलाइज़ेशन – कि हम खुद कैसे हैं? हम भी परफेक्ट नहीं हैं। हमारे में भी कोई न कोई कमियाँ हैं। उसमें एक है, मेरे में दूसरी है। अगर सेल्फ रियलाइज़ेशन हमें क्लियर है, तो हमें फिर वो विचार नहीं आयेंगे कि ये ऐसे हैं, वैसे हैं। हमें दोनों तरफ से लक्ष्य रहे 'एडजस्टमेंट का'। कुछ हम भी एडजस्ट करें, कुछ और भी एडजस्ट करें। दोनों तरफ से होता है तो आसानी से हम मिल के चल सकते हैं। पर शुरुआत तो खुद से ही करनी होती है। ज़िम्मेवार तो हम अपने ही बन सकते हैं, दूसरे के तो बन नहीं सकते।

आत्म स्थिति का अभ्यास प्रबल करें

जितना हम आत्म स्थिति में रहते हैं और अपनी वास्तविकता – जो मुझ आत्मा के गुण, स्वभाव-संस्कार, शक्ति है, उसकी क्लियर मुझे महसूसता है तो मैं दूसरों को भी अंडरस्टैन्ड कर सकती हूँ; और मिल के चल सकती हूँ। बाबा ने यह पाठ तो सिखाया है ना हमें कि वैराइटी ड्रामा है, वैराइटी आत्मायें हैं, हर आत्मा का स्वभाव-संस्कार अपना-अपना है। तो प्रैक्टिकली हम अपने-आपको विभिन्न स्वभाव-संस्कार वाली आत्माओं के बीच भी, हम अपने-आपको ठीक, एकरस रख सकते हैं। हम ज़्यादा डिस्टर्ब नहीं होंगे।

ये तो फर्स्ट लेवल है। उसको तो पहले क्रॉस करना है। फिर परिस्थितियाँ हैं। गवर्नमेंट की तरफ से आती हैं, प्रकृति की तरफ से आती हैं। परिस्थितियाँ तो आती हैं ना, नौकरी में, धन्धे में, बिज़नेस में, सब में। तो वहाँ भी हमें हिम्मत से, धीरज से और योगबल से चलना है। फेस तो इन पॉवर्स से करना है ना! परिस्थिति तो हर किसी के सामने आती है पर कोई व्यापारी तनाव में आ जाता है, कोई डिप्रेस हो जाता है, कोई हँसी-खुशी से पार कर देते हैं। परिस्थिति हर किसी के सामने आती है पर अपनी आन्तरिक, आत्मस्थिति से हम उनको पार करते हैं। उस समय डिस्टर्ब हो गये, टेन्स हो गये तो बाबा कहते हैं ना, फिर सॉल्यूशन नज़र नहीं आयेगा। जब कोई भी परिस्थिति आती है तो शान्ति और धीरज से हमें उनका सामना करना होता है। हम तो घबरा गये। घबरा गये तो फिर निर्णय नहीं कर पायेंगे। जब घबरा गये तो हम तो डिस्टर्ब हो गये, तो फिर निर्णय कैसे लेंगे? ठीक है, परिस्थिति आई है, इसलिए हमें ये जो रोज़ न्यारा रहने की प्रैक्टिस बाबा कराते हैं ना कि रोज़ देहभान से न्यारे रहो। रोज़ अपने 'रोल' से न्यारे रहो कि ये ड्रामा में 'रोल' है, पार्ट है। तो आप निरीक्षण कर सकेंगे कि क्या बात आई है, कैसे उनको पार कर सकते हैं।

माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आबू पर्वत आकाशवाणी में रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में आबू पर्वत आकाशवाणी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्याम पंवार, श्रीमति पंवार, दिल्ली आकाशवाणी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नीरज शर्मा, श्रीमति शर्मा, आबू पर्वत आकाशवाणी स्टाफ, ब्र.कु. चंद्रशेखर भाई, ब्र.कु. शशिकांत भाई, ब्र.कु. नम्रता बहन तथा ब्र.कु. ज्ञानेश्वर भाई।

माया क्या है और रावण क्या है?

जानें....

आत्मा दशरथी उसके चार पुत्र पुरुषार्थी

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में हमने जाना कि माया क्या और रावण क्या। और दूसरा दशरथ क्या और उनकी जो तीन साथियां थीं उनका सही मायने में अर्थ क्या। अब हम आगे जानते हैं...

धीरे-धीरे जैसे ही सतयुग-त्रेतायुग पूरा होकर के द्वापर में भी तीन हिस्सा सुख मिला, लेकिन चौथे कलियुग के अन्दर कहीं न कहीं, कुछ-न-कुछ युद्ध शुरू हुआ जीवन के अन्दर भी। और उन युद्धों के कारण कहा कि घर में शान्ति बनी रहे, तो उसके लिए यज्ञ किया। और उस यज्ञ से जो फल माना 'संगमयुग' आ जाता है, बाबा ने आकर ये बेहद का यज्ञ किया और इस यज्ञ के फलस्वरूप चार बेटे हरेक को दिये। हरेक ब्राह्मण को चार बेटे मिले। जिसकी परवरिश हमें निरन्तर करनी है। तो ये चार बेटे कौन-से हैं?

पहला है 'श्री राम' अर्थात् ज्ञान। ज्ञानी तू आत्मा। दूसरा, 'भरत' माना 'समर्पण भाव'। योग माना ही ईश्वर के प्रति 'समर्पण भाव'। तीसरा, लक्ष्मण माना जिसका लक्ष्य मन का इतना स्पष्ट और अविचलित, और ये लक्ष्य इसीलिए था क्योंकि 'त्याग' की शक्ति थी। लक्ष्मण ने जैसा 'त्याग' किया वैसा त्याग किसी का नहीं दिखाते, राम का भी नहीं दिखाते हैं, ऐसा त्याग किया। अर्थात् जो धारणामूर्त आत्मा है। और चौथा, 'शत्रुघ्न'। जो सबकी सेवा करता है। सारी माताओं की भी सेवा करता है, सबकी सेवा करने वाला सेवाधारी। तो ब्राह्मण जीवन के ये चार आधार – 'ज्ञान', 'योग', 'धारणा' और 'सेवा' ये चार बेटे हैं, जिसकी परवरिश हमें निरन्तर करते रहना है। जिसको मजबूत बनाना है। क्योंकि यही जीवन का आधार है। उसको मजबूत करने के लिए उन्हें गुरुकुल में भेजा गया, शिक्षा-दीक्षा लेने के लिए। अर्थात् ये ब्राह्मण जीवन में भी इन चारों सब्जेक्ट को मजबूत करने के लिए रोज़ पढ़ाई पढ़ना अनिवार्य है। तभी बाबा कहते हैं – मुरली कभी मिस नहीं करना है। क्योंकि मुरली से ही, शिक्षा से ही, ये चारों,जीवन के आधार को हम परिपक्व कर देते हैं, मजबूत कर देते हैं। ताकि जीवन में कोई भी प्रकार की माया आई, या रावण भी आ जाये, तो भी हमें हरा नहीं सकता है। इसलिए ये चारों सब्जेक्ट को मजबूत करना बहुत आवश्यक है। क्योंकि नहीं तो माया तो आती ही रहेगी।

इसीलिए सबसे पहली माया जो दिखाई, वो थी 'ताड़का'। और वो माया क्या करती है? तो बताया जो ऋषि यज्ञ करते थे उसमें विघ्न डालते थे, हड्डियाँ डालते थे, भावार्थ यह है कि जो आत्माएँ तपस्या कर रही थीं ब्राह्मण जीवन में, उसके जीवन में 'विघ्न' डालने का काम ये माया करती है। तब इस माया को भी जीतने के लिए 'राम और लक्ष्मण' दोनों मिल कर जीतते हैं। भावार्थ यह है कि जब यह विघ्न आता है, उस समय योग करने के लिए कहा जाए, योग नहीं लगता है। लेकिन उस समय 'ज्ञान का प्रैक्टिकल एप्लीकेशन' और 'धारणा' ही हमारे हर विघ्न को पार करने के लिए हमें सक्षम बना देती है, पॉवरफुल बना देती है। धारणा को कसने की आवश्यकता है। क्योंकि ये ताड़का कहाँ से आती है जहाँ कहीं हमारी धारणाओं में हम लूज़ हैं, कमज़ोर हैं। चलता है, होता है, जहाँ इस तरह की भावना रखी तो कोई-न-कोई माया विघ्न डालने का काम ज़रूर करती है। इसीलिए 'ज्ञान' और 'धारणा' को पॉवरफुल करो। ज्ञान का एप्लीकेशन बाबा ने हर बात का एप्लीकेशन हमें दिया हुआ है। कहाँ ड्रामा की प्वाइंट को एप्लाई करो, कहाँ कर्म फिलॉसफी को एप्लाई करना है, तो कहाँ इन परीक्षाओं को समझते कौन-सी ज्ञान की प्वाइंट, फुल स्टॉप लगाना है या वाह-वाह के गीत गाने हैं, ये सारे ज्ञान के जो विभिन्न शस्त्र हैं, इन शस्त्रों को यूज़ करना है और उस ताड़का को खत्म करना है। 'धारणा' को पॉवरफुल कर देना है तो 'ताड़का' समाप्त होगी।

> बाबा ने आकर ये बेहद का यज्ञ किया और इस यज्ञ के फलस्वरूप चार बेटे हरेक को दिये। हरेक ब्राह्मण को चार बेटे मिले। जिसकी परवरिश और पल्लिवत कर परफेक्ट बनने की दिशा में आगे बढ़ना है। ना रूकना है न थकना।

फिर जैसे-जैसे आगे बढ़े तो कहा जाता है कि सीता के साथ का वरण हुआ। शिव धनुष को उठाया। ज्ञानी-तू-आत्मा शिव धनुष उठाती है मतलब शिव धनुष कौन-सा है? शिव धनुष है – 'ब्रह्मचर्य व्रत की पालना का धनुष'। इसीलिए जो अहंकारी व कमज़ोर होते हैं वो इस धनुष को नहीं उठा सकते, लेकिन जो 'ज्ञानी-तू-आत्मा' जिसने अपने जीवन के अन्दर ब्रह्मचर्य व्रत की पालना की, जो बहुत आवश्यक है ब्राह्मण जीवन में, वो इस धनुष को सहज उठा सकते हैं और जब धनुष को उठाते हैं तब सीता के साथ का वरण होता है। अर्थात् सीता माना 'पवित्रता की प्रतिमूर्ति'। ब्रह्मचर्य व्रत के लिए बहुत सारी बातें आयेंगी जीवन के अन्दर। परशुराम भी पहुँच जायेगा कि कैसे उठा लिया तुमने इस धनुष को?

कई प्रकार की महान बातें भी आपके सामने आयेंगी लेकिन जिसने इस 'शिव-धनुष' यानी प्रतिज्ञा को जीवन के अन्दर मजबूत कर लिया, वही 'सीता' के साथ यानी 'पवित्रता' के साथ ज्ञान का वरण होता है। और जब ज्ञान का वरण 'पवित्रता' के साथ हो जाये तो वह आत्मा बहुत मजबूत हो जाती है। उसपर कोई भी 'माया' या कोई भी 'रावण' जीत प्राप्त नहीं कर सकते। - क्रमशः

नेपाल-काठमाण्डू। नेपाल के सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस सम्माननीय विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ जी को रक्षासूत्र बांधते हुए नेपाल स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी।

कोटा-वल्लभनगर(राज.)। राजस्थान पत्रिका के मुख्य संपादक पंकज श्रीवास्तव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

दिल्ली-मजलिस पार्क। स्थानीय सेवाकेन्द्र की ओर से अभिषेक तिवारी,राष्ट्रीय सचिव संगठन प्रवक्ता आम आदमी पार्टी तथा राकेश जी,प्रॉपर्टी डीलर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. राज कुमारी दीदी, ब्र.कु. शारदा दीदी, ब्र.कु. सुब्रा बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

मोहाली-पंजाब। अमर दीप सिंह ढ़िल्लों,आरटीओ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अदिति बहन।

उरई-जालौन(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक नीरज देव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना बहन। इसके साथ ही डिप्टी जेलर प्रदीप कुमार व जिला कारागार के सभी कैदी भाइयों को भी रक्षासूत्र बांधा गया। इस दौरान ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. संतोषी बहन, ब्र.कु. बृजभान भाई, ब्र.कु. निशा बहन, ब्र.कु. सिद्धि बहन आदि ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

मोतिहारी-बिहार। नगर के हीरा सोना के बड़े व्यापारी कृष्ण प्रसाद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीणा बहन। इस मौके पर ब्र.कु. नीतू बहन व ब्र.कु. प्रकाश वर्मा भी उपस्थित रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- - 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये
Website: www.omshantimedia.org

अपनी इस शरीर रूपी मशीन का अच्छे से रखें ख्याल...

आप भी... आलू के फायदे जान होंगे हैरान

आलू जिसको सब्जियों का राजा कहा जाता है क्योंकि ये हर सब्जी के साथ चल जाता है। हमारे देश में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसने कभी आलू ना खाया हो और शायद ही किसी घर की रसोई होगी जिसमें ये ना पाया जाए। आलू एक ऐसी सब्जी जिससे सैकड़ों व्यंजन बनते हैं। सिर्फ व्यंजन ही नहीं आलू से चिप्स, पकोड़े, फ्राइस और कई अन्य खाद्य सामग्री बनाई जाती है। आलू से बना कोई भी व्यंजन हो सब बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

हम सब आलू बड़े शौक से खाते हैं। लेकिन हमेशा आलू के बारे में नकारात्मक बातें ही सुनने को मिलती हैं। जैसे इससे फैट बढ़ता है, शुगर बढ़ता है आदि। आलू से होने वाले फायदों के बारे में शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। जी हाँ, आलू के कई सकारात्मक गुण होते हैं। खासकर कच्चे आलू के रस के, तो आइए जानते हैं...

कच्चे आलू का रस विटामिन सी, फाइबर, विटामिन बी, पोटैशियम, मैग्नीशियम, मैंगनीज, तांबा, लोहा, कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर और कुछ प्रोटीन से भरपूर होता है।

गठिया के लिए आलू का रस

गठिया के दर्द से लेकर घुटनों, कोहनियों, जोड़ों, गर्दन, कंधों, या पीठ के दर्द तक - कच्चे आलू में सूजन-रोधी प्रभाव होता है। यह उस दर्द को कम करने में मदद कर सकता है। इनमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट पुरानी सूजन को कम करने में मदद करते हैं। हालांकि सूजन हमारे लिए अच्छी है क्योंकि यह हमारी रक्षा के लिए आपके शरीर की प्राकृतिक रक्षा तंत्र है लेकिन जब यह अनियंत्रित और पुरानी हो तो यह खतरनाक हो सकती है।

परिसंचरण में सुधार

हममें से कई लोग आज खराब सर्कुलेशन से जूझ रहे हैं। आपका रक्त आपके द्वारा खाए गए भोजन से ऑक्सीजन, एक महत्वपूर्ण जीवन शक्ति और पोषक तत्वों को आपके शरीर की अरबों कोशिकाओं तक पहुंचाता है। हम हमेशा कहते हैं- यह सिर्फ इस बारे में नहीं है कि आप क्या खाते हैं बल्कि यह भी है कि आपका शरीर इसे कैसे आत्मसात और पचाता है। ये पोषक तत्व आपकी कोशिकाओं को तभी पोषण दे सकते हैं जब आपका पाचन तंत्र कुशलता से काम कर रहा हो, जिसके लिए उचित रक्त परिसंचरण महत्वपूर्ण है। कच्चे आलू और उनका रस विटामिन बी(नियासिन) से भरपूर होता है जो आपके शरीर के सभी हिस्सों में ऑक्सीजन और रक्त परिसंचरण को बढ़ावा देता है।

पीएच संतुलन के लिए

अधिकांश बीमारियां अम्लीय वातावरण में पनपती हैं। हाँ, आपके शरीर में अम्लीय और क्षारीय स्तरों के अनुपात को नियंत्रण में रखने के लिए एक प्राकृतिक पीएच संतुलन तंत्र है। लेकिन आज खराब जीवनशैली और जंक फूड, क्रोनिक तनाव, अनियंत्रित सूजन, ब्रॉड-स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स और दवाओं के निरंतर संपर्क के कारण हमारा शरीर अधिक अम्लीय होता जा रहा है। इसलिए हमें कभी-कभी इसे क्षारीय बनाने में सहायता की आवश्यकता होती है। कच्चे आलू का रस अत्यधिक क्षारीय होता है और पेट में अतिरिक्त एसिड को नियंत्रित कर देता है। कई कैंसर रोगी सुबह उठते हैं और अपने शरीर को क्षारीय बनाए रखने के लिए सुबह, दिन के बीच या रात में भी कुछ कच्चे आलू का रस पीते हैं।

अतिरिक्त यूरिक एसिड के लिए आलू का रस

आप जानते हैं कि आपके शरीर में अतिरिक्त यूरिक एसिड गाउट जैसे स्थिति का कारण बन सकता है, जहाँ आप अपने जोड़ों में अचानक और गंभीर दर्द, कोमलता या सूजन का अनुभव करते हैं। आज बहुत से लोग यूरिक एसिड की समस्या से जूझ रहे हैं। इसका सबसे आम लक्षण आपके बड़े पैर के अंगूठे में दर्द है। आपके शरीर का बायोफीडबैक संकेत दे रहा है कि आपकी किडनी ठीक से काम नहीं कर रही है। यह आपके शरीर में अतिरिक्त यूरिक एसिड से छुटकारा पाने में असमर्थ है। कच्चे आलू का रस आपके शरीर से यूरिक एसिड को तोड़कर बाहर निकाल सकता है। इसलिए यदि आप यूरिक एसिड से संबंधित समस्याओं से पीड़ित हैं, तो सुबह या रात में एक गिलास कच्चे आलू का पानी पीना आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

मुलायम, चमकदार और मजबूत बालों के लिए

कच्चे आलू का रस पीएच स्तर को संतुलित करने, आपकी खोपड़ी को साफ रखने और रूसी, एक्जिमा और अन्य फंगल समस्याओं से लड़ने में मदद कर सकता है। इसका नियमित रूप से उपयोग करने से कोलेजन भी बढ़ता है जो आपके बालों के रोमों को पोषण देता है, पतलेपन से लड़ता है और विकास को बढ़ावा देता है। चूंकि यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है, इसलिए यह बालों के सफेद होने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है।

उपयोग : कच्चे आलू के रस को कॉटन पैड की मदद से अपने स्कैल्प और बालों की लंबाई पर लगाएं। इसे 20 मिनट से एक घंटे के लिए छोड़ दें। पानी से धोएं। आप इसके बाद केमिकल मुक्त शैम्पू का उपयोग कर सकते हैं।

काले घेरे और सूजन के लिए

कच्चे आलू का रस काले घेरों को ठीक करने और आपके चेहरे पर पानी जमा होने के कारण होने वाली सूजन को कम करने में भी प्रभावी है। काले घेरों के लिए कच्चे आलू के रस को रुई में भिगोकर अपनी आँखों के नीचे लगाएं। आलू का रस पीने से सूजन कम करने और आपकी प्राकृतिक चमक में सुधार करने में भी मदद मिलती है।

इस रस का सेवन करने से पहले इन सावधानियों का ध्यान रखें...

हर चीज़ एक अस्वीकरण के साथ आती है। इसे तभी करें जब यह आपको सूट करे। कच्चे आलू का रस ज़्यादा नहीं पीना चाहिए।

एक दिन में 2-4 चम्मच से ज़्यादा या एक मीडियम आलू के रस से ज़्यादा रस नहीं पीना है।

आलू खरीदते समय भी इस बात का ध्यान रखें कि आलू अंदर से दिखने में रहे रंग का न हो।

पहले हमेशा अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से बात करें। खासकर यदि आपके रक्त में पोटैशियम का स्तर उच्च है और आपको कम पोटैशियम आहार पर रहने की सलाह दी जाती है। कच्चे आलू में पोटैशियम भरपूर मात्रा में होता है। इसलिए हमेशा सोच-समझकर चुनाव करें।

माउण्ट आबू। देलवाड़ा जैन मंदिर के नव नियुक्त मैनेजर प्रशांत सावंत को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. स्मिता बहन, ब्र.कु. संजुगता बहन,ग्लोबल हॉस्पिटल, ब्र.कु. शशिकांत भाई,पांडव भवन तथा ब्र.कु. अनिल भाई,ग्लोबल हॉस्पिटल।

रूरा-कानपुर(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक राजेंद्र कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. शिखा बहन, ब्र.कु. भारती बहन, ब्र.कु. राजपाल भाई तथा वीर सिंह।

रतिया-हरियाणा। प्रो. रविंद्र बलियाला,अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. मदन भाई तथा अन्य।

जयपुर-निर्माण नगर(राज.)। इंडसलैंड बैंक के रिजनल हेड कैलाश शेवकानी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता बहन।

नूरपुर-हि.प्र.। एन.डी.आर.एफ. के जवानों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताने के पश्चात् ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन और ब्र.कु. सुषमा बहन।

दिल्ली-हर्ष विहार। एसएचओ बलराम सिंह बेनिवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मुन्नी बहन। साथ हैं ब्र.कु. रागिनी बहन।

दिल्ली-संत नगर। एसीपी राजेन्द्र प्रसाद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा बहन।

नई दिल्ली। नितिन गडकरी,मिनिस्टर ऑफ रोड,ट्रांसपोर्ट एंड हाईवेज़ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. निकिता बहन।

नई दिल्ली। गजेन्द्र सिंह शेखावत,मिनिस्टर ऑफ जल शक्ति को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. निकिता बहन तथा अन्य।

नई दिल्ली। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. बहनें व भाई।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अगर हर रोज़ अपने को कहेंगे कि मुझे मेरे लिए टाइम नहीं है तो फिर अपने से रिश्ता नहीं जुड़ेगा और मन से रिश्ता नहीं जुड़ेगा। अगर मैंने उससे रिश्ता जोड़ा नहीं है तो वो मेरा कहना माने क्यों! कहना तो वही मानता है जिससे हमारा रिश्ता है।

जब तक मैं अपने को न समझूं तब तक किसी और को समझना मुश्किल है...

अपने रिश्तों को सुंदर बनाने के लिए सबसे पहले अपने साथ रिश्ता जोड़ना होगा। जब तक मेरा रिश्ता अपने साथ नहीं है, तब तक औरों से रिश्ता जोड़ना बहुत कठिन है। जब तक मैं अपने से प्यार नहीं करूं, किसी और से प्यार करना मुश्किल है। जब तक मैं अपने लिए समय नहीं निकालूं, किसी और के लिए समय निकालना मुश्किल है। जब तक मैं अपने को नहीं समझूं, तब तक किसी और को समझना मुश्किल है। फिर हम आजकल कहते हैं कि हम उनको समझ नहीं पाते हैं। वो ऐसा क्यों कर रहे हैं, वो ऐसा क्यो बोल रहे हैं, उनका व्यवहार ऐसा क्यों है मुझे समझ में नहीं आता है। चलो उनका समझ में नहीं आता है कोई बात नहीं। मैं ऐसा क्यों बोलती हूँ वो समझ में आता है? मेरा मन यहां-वहां क्यों जाता है वो समझ में आता है? जब तक अपना ही नहीं समझ आता, तब तक किसी और का समझना मुश्किल है।

जब हम अपने को समझ लेते हैं तो और लोग अपने आप समझ में आने लग जाते हैं। दूसरों को गुस्सा क्यों आता है मुझे नहीं समझ में आता, बात कोई इतनी बड़ी नहीं होती है ऐसे ही शोर मचा देते हैं। लेकिन मुझे गुस्सा क्यों आता है ये समझ में आता है। जब मुझे ये समझ में आ जाएगा कि मुझे गुस्सा क्यों आता है, मेरे अन्दर उस समय क्या होता है, तो उनको समझना आसान हो जाएगा। इसलिए सबसे पहले अपने को समझना, अपने को जानना, अपने को पहचानना और अपने से रिश्ता जोड़ना। हम अपने लिए कितना समय निकालते हैं रोज़? अपने लिए तो कहेंगे हमारे पास टाइम नहीं है। जो लोग ज़रूरी होते हैं, जो रिश्ते हमारे लिए मायने रखते हैं, अगर हम हर रोज़ उनको कहें कि हमारे पास आपके लिए टाइम नहीं है तो रिश्ता कैसा हो जाएगा! अगर हर रोज़ अपने को कहेंगे कि मुझे मेरे लिए टाइम नहीं है तो फिर अपने से रिश्ता नहीं जुड़ेगा और मन से रिश्ता नहीं जुड़ेगा। अगर मैंने उससे रिश्ता जोड़ा नहीं है तो वो मेरा कहना माने क्यों! कहना तो वही मानता है जिससे हमारा रिश्ता है। जिसको हम प्यार करते हैं, जिस पर हम ध्यान देते हैं, जिसके साथ हम समय बिताते हैं वो हमारा कहना मानते हैं। मन को हम प्यार नहीं करते, उसके साथ समय नहीं बिताते, हर समय कहते हैं टाइम नहीं है और फिर हम चाहें कि हमारा मन हमारा कहना मानें तो ये होने वाला नहीं है। जैसे ही इसके साथ थोड़ा-सा समय बिताना शुरू किया, इसको प्यार से समझना शुरू किया, इसको प्यार से अनुशासित करना शुरू किया तो यह आपका कहना मानना भी शुरू कर देता है। सारा दिन में बीच-बीच में एक मिनट के लिए रूकें और सिर्फ अपने मन को देखें कि अभी इसमें क्या चल रहा है। और कुछ नहीं करना। सारा दिन विचार चल रहे हैं वो पता चल रहा है कि वो चलते हैं। क्या सोच रहे हैं। मानों सुबह उठे, शरीर बाद में उठता है मन पहले उठ जाता है। कई बार तो वो रात को सोता भी नहीं है। वो रात को भी चल रहा है। जिसको हम सपने कहते हैं, उनमें। जैसे ही सुबह उठते हैं नींद खुली, पहली चीज़ क्या चलना शुरू हो जाता है। जल्दी करो लेट न हो जाएं, पानी भरना है, नहीं भरा तो पानी चला जाएगा। फिर बच्चों को लेट हो जाएगा, उठना है तैयार करना है। ये सब क्या हो रहा है हमारा मन चल रहा है। ये हमारे विचार हैं जो हम बना रहे हैं।

अब हमें क्या करना है। एक सेकंड के लिए- एक मिनट भी नहीं लगता- सेकंड के लिए कौन-सा वाला विचार चल रहा था? चेक करना है क्या चल रहा है। अभी चेक करो क्या चल रहा है। कई बार हम मन के विचारों की तरफ ध्यान नहीं देते तो वो बहुत कुछ चलता जाता है। हमें पता ही नहीं होता क्या चल रहा है। जब पता ही नहीं है कि क्या चल रहा है तो फिर उसको चेंज करना तो संभव ही नहीं है। आप जैसे ही मन को देखेंगे अगर वो गड़बड़ वाले विचार कर रहा होता है तो तुरंत अटेंशन में आ जाता है। क्योंकि हमें तुरंत लग जाता है कि ये मैं क्या सोच रहा हूँ। सिर्फ देखना ही परिवर्तन कर देता है। ये करने में सिर्फ एक सेकंड लगेगा।

नई दिल्ली। मुख्तार अब्बास नकवी,फॉर्मर यूनियन मिनिस्टर ऑफ माइनॉरिटी अफेयर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता बहन। साथ हैं ब्र.कु. निकिता बहन।

होशियारपुर-पंजाब। कैबिनेट मंत्री ब्रह्मशंकर जिम्पा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।

देवबंद-गुज्जरवाड़ा(उ.प्र.)। लोक निर्माण विभाग राज्यमंत्री कुंवर बृजेश सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुधा बहन।

नोएडा-उ.प्र.। सुप्रिया प्रसाद,न्यूज़ डायरेक्टर,आज तक न्यूज़ चैनल,इंडिया टुडे एंड 'तक' को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अदिति बहन,ज्ञानसरोवर,माउण्ट आबू।

शाहपुरा-राज.। विराटनगर से डीएनटी घूमंतु, अर्द्ध घूमंतु विमुक्त जनजाति बोर्ड चेयरमैन व राज्यमंत्री उर्मिला योगी को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी।

दिल्ली-पीतमपुरा। पंजाब केसरी अखबार के डायरेक्टर चेयरपर्सन किरण चोपड़ा तथा अन्य स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. ऊषा बहन।

बांदा-उ.प्र.। मंडलायुक्त आर.पी. सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी बहन तथा अन्य।

डीग-राज.। ब्रजेश ज्योति उपाध्याय,आईपीएस पुलिस अधीक्षक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रवीणा बहन।

लक्ष्मणगढ़-राज.। मोदी यूनिवर्सिटी लक्ष्मणगढ़ के डायरेक्टर राजीव माथुर को ब्र.कु. अमृता बहन एवं ब्र.कु. मीनू बहन द्वारा रक्षासूत्र बांधकर माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट में आने का निमंत्रण दिया गया।

अल्मोड़ा-उत्तराखंड। जिलाधिकारी विनीत तोमर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम बहन,संचालिका,कुमाऊँ क्षेत्र,हल्द्वानी।

परमात्म ऊर्जा

स्व स्मृति में रहने वाला सदैव जो भी कार्य करेगा व जो भी संकल्प करेगा उसमें उसको सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य व यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है अर्थात् ऐसा निश्चयबुद्धि अपनी विजय व सफलता निश्चित समझ कर चलता है। निश्चय ही है, जो ऐसे निश्चित सफलता समझकर चलने वाले हैं उनकी स्थिति कैसी रहेगी? उनके चेहरे में क्या विशेष झलक दिखाई देगी? निश्चय तो सुनाया कि निश्चय होगा विजय हमारी निश्चित है; लेकिन उनके चेहरे पर क्या दिखाई देगा? जब विजय निश्चित है तो निश्चिंत रहेगा ना! कोई भी बात में चिंता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिंत रहने वाले हो? अगर नहीं तो निश्चयबुद्धि 100 प्रतिशत कैसे कहेंगे? 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिंत। अब इससे अपने आपको देखो कि 100 प्रतिशत सभी बातों में निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाप में निश्चय को भी निश्चय बुद्धि नहीं कहा जाता। बाप में निश्चयबुद्धि, साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिए और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकंड की एक्ट रिपीट हो रही है- उसमें भी 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि हो ना! उसमें संशय की बात नहीं। सिर्फ एक में पास नहीं होना है।

अपने आप में भी इतना ही निश्चय होना चाहिए कि मैं भी वही कल्प पहले वाली, बाप के साथ पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ और साथ-साथ ड्रामा के हर पार्ट को भी इसी स्थिति से देखें कि हर पार्ट मुझ श्रेष्ठ आत्मा के लिए कल्याणकारी है। जब यह तीनों प्रकार के निश्चय में सदा पास रहते हैं, ऐसे निश्चयबुद्धि ही मुक्ति और जीवन मुक्ति में बाप के पास रहते हैं। ऐसे निश्चयबुद्धि को कब क्वेश्चन नहीं उठता। "क्यों, क्या" की भाषा निश्चयबुद्धि की नहीं होती। क्यों के पीछे क्यू लगती है; तो क्यू में भक्त ठहरते, ज्ञानी नहीं। आपके आगे तो क्यू लगनी है ना! क्यू में इंतज़ार करना होता है। इंतज़ार की घड़ियां अब समाप्त हुई। इंतज़ार की घड़ियां हैं भक्तों की। ज्ञान अर्थात् प्राप्ति की घड़ियां, मिलन की घड़ियां। ऐसे निश्चयबुद्धि हो ना! ऐसे निश्चयबुद्धि आत्माओं की यादगार यहां ही दिखाई हुई है। अपनी यादगार देखी है? अचल घर देखा है? जो सदा सर्व संकल्पों सहित बापदादा के ऊपर बलिहार हैं उन्हों के आगे माया कब वार नहीं कर सकती। ऐसे माया के वार से बचे हुए रहते हैं। बच्चे बन गये तो बच गये। बच्चे नहीं तो माया से भी बच नहीं सकते। माया से बचने की युक्ति बहुत सहज है। बच्चे बन जाओ, गोदी में बैठ जाओ तो बच जायेंगे।

पहले बचने की युक्ति बताते हैं, फिर भेजते हैं। बहादुर बनाने लिए ही भेजते हैं, हार खाने के लिए नहीं, खेल खेलने के लिए, जब अलौकिक जीवन में हो, अलौकिक कर्म करने वाले हो, तो इस अलौकिक जीवन में खिलौने सभी अलौकिक हैं जो सिर्फ इस अलौकिक युग में ही अनुभव करते हो। यह तो खिलौने हैं जिससे खेलना है, न कि हारना है।

डेरापुर-उ.प्र.। समाजसेविका कंचन मिश्रा को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. वंदना बहन तथा अन्य।

सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुन्तला बहन। साथ हैं ब्र.कु. रेवादास भाई तथा अन्य।

शिमला-पंथाघाटी(हि.प्र.)। माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सुखु को उनके निवास पर जाकर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी बहन व ब्र.कु. सुनीता बहन।

बड़ौत-कैनाल रोड(उ.प्र.)। कृष्णपाल मलिक,स्टेट मिनिस्टर फॉर फॉरेस्ट एनवायरमेंट, एनिमल पार्क्स एंड क्लाइमेट चेंज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी बहन।

गुवाहाटी-रूपनगर(असम)। माननीय मुख्यमंत्री हेमंत बिश्वा शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कोरोबी बहन।

दिल्ली-हरिनगर। श्रीमति अन्नपूर्णा देवी,केंद्रीय राज्य शिक्षा मंत्री को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नेहा बहन। साथ हैं ब्र.कु. स्नेहा बहन।

मैनपुरी-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर सांसद व समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष अखिलेश यादव की धर्मपत्नी डिंपल यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अवंती बहन।

कथा सरिता

व्यक्ति के गुण ही महत्त्व रखते

रामरती की दो बहुए थीं। बड़ी बहू का नाम रेखा था। जो देखने में काली थी। वह उसके बड़े बेटे मोहन की बीवी थी। उन दोनों की लव मैरिज़ थी। रामरती अपनी बड़ी बहू को उसके रंग के कारण बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी।

उसकी छोटी बहू का नाम कमला था। जोकि उसके छोटे बेटे रवि की बीवी थी। रामरती छोटी बहू कमला को बहुत पसंद करती थी। क्योंकि वह देखने में सुंदर थी और उसको रवि के लिए उसने पसंद किया था।

रेखा कुछ दिनों के लिए अपने मायके गयी हुई थी। रामरती अपने पति से रेखा चुगली करती है कि अगर मोहन ने मेरी बात मानी होती तो उसकी भी कमला जैसी सुन्दर बहू लेकर आती। रामरती का पति भी अपनी पत्नी को समझाता था कि रंग-रूप से कुछ नहीं होता, व्यक्ति के गुण मायने रखते हैं। लेकिन रामरती को कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दिन रामरती के छोटे बेटे और बहू ने गोवा जाने का प्लैन बनाया। उनको दो दिन बाद गोवा जाना था। अगले दिन रामरती की कमर में बहुत दर्द होने लगा।

उसको डॉक्टर के पास जाना था तो उसने अपने छोटे बेटे रवि को कहा तो रवि ने बोला कि आज हमें शॉपिंग करने के लिए मार्केट जाना है। आप बड़े भाई के साथ चले जाइये। शाम को जब वह घर लौटे तो रामरती की तबियत ज़्यादा खराब थी और घर पर डॉक्टर आये हुए थे।

डॉक्टर ने रामरती को 1 हफ्ते बेडरेस्ट की सलाह दी। रवि के पिता ने रवि को गोवा में बाद में जाने की सलाह दी। तब छोटी बहू कमला बोली कि हमने गोवा जाने का बहुत दिन से प्लैन किया हुआ है। माँ जी तो रोज़-रोज़ बीमार होती हैं।

यह कहकर चली गयी। मोहन बोला पिता जी कोई बात नहीं मैं रेखा को कल सुबह ही बुला लूंगा। अगले दिन रवि और उसकी बीवी गोवा चले गए। रेखा को जैसे ही पता चला कि माँ जी की तबियत खराब है वह तुरंत घर पर पहुंच गयी।

रामरती को फिर अपनी गलती का एहसास हुआ कि रंग-रूप से ज़्यादा व्यक्ति के गुण महत्त्व रखते हैं। वह जिस छोटी बहू को अच्छा समझती थी उसने ही उसको दुःख पहुंचाया जबकि जिस बड़ी बहू रेखा को वह पसंद नहीं करती थी उसके अच्छे गुणों से वह बहुत खुश थी।

सीख : हमें व्यक्ति के रंग-रूप से ज़्यादा व्यक्ति के गुणों पर ध्यान देना चाहिए।

धीर-गम्भीर, अति मर्यादित, कुलदीपक, आर्यावर्त की शान, देवभूमि के अति विशिष्ट देवता, शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले, विदेही अवस्था के साथ जुड़कर परमात्म प्रणय को अभिन्न अंग बनाने वाले का अगर जन्म होगा तो विशेष ही होगा।

रमन करने वाले 'राम' बनो

विश्व में दो विशिष्ट देवता प्रचलित हैं, एक श्रीकृष्ण, दूसरे श्रीराम। कृष्ण के साथ जुड़ी है कृष्ण जन्माष्टमी और श्रीराम के साथ जुड़ी है रामनवमी। भक्ति मार्ग में श्री रामचंद्र जी को चौदह कला सम्पूर्ण दिखाते हैं और उनके हाथ में धनुष और तर्कश में तीर दिखाते हैं। कृष्ण को चंचलता के साथ जोड़ा जाता है अर्थात् जो कलात्मक ढंग से हर कर्म को करे और सबका मन मोह ले। और जिसको मोह भी न हो। तभी तो नाम मोहन पड़ा। ठीक उसी प्रकार श्री रामचंद्र को जीवन चरित्र के साथ जोड़ा गया, जीवन दर्शन के साथ जोड़ा गया। जो जीवन में है लेकिन जीवन को मर्यादित कैसे जीया जाये उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप से श्रीराम में नज़र आता है। राम जीवन है अर्थात् जो निरंतर एक भी धारणा और मर्यादा को ना तोड़ सभी के साथ तोड़(सम्बंध) निभाता है।

इस दुनिया में विकारग्रस्त मनुष्य अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश जो भी मनुष्य हैं उनके कर्म में न कहीं मर्यादा है और न ही कोई धारणा है। अगर राम के चरित्र को लिखित रूप में कहीं पढ़ते भी हैं तो उसको अपनी समझ के अनुसार प्रयोग में लाते हैं। कहते हैं, राम थे बहुत अच्छे लेकिन सीता को बाहर निकाल दिया। अब इसका क्या गलत इस्तेमाल होने लगा कि जब राम जैसा महान व्यक्तित्व श्री सीता को बाहर निकाल सकता है तो तुम क्या चीज़ हो। और उसमें एक चीज़ और टिप्पणी में आती है कि एक साधारण धोबी के कहने से राम के अंदर शंकालु प्रवृत्ति कैसे प्रकट हो सकती है! वो तो अति समझदार और सयाने थे। क्या लेखक द्वारा चरित्र का ऐसा वर्णन सुनकर हम सब भी तो उसी बहाव में बहे नहीं जा रहे! अगर इसे हम अपने जीवन के साथ जोड़कर देखें तो किसी और के कहने से क्या हम सबको बाहर निकाल देते हैं! हम भी तो देखते-परखते हैं कि बात क्या है। ऐसे थोड़े ही हम किसी को बाहर निकाल देंगे और जो धारावाहिक बना उसमें भी राम को उलझन में दिखाया गया कि जनता ऐसे कैसे बोल सकती है श्री सीता के लिए! तो रामचंद्रजी ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। ये आज हम एक मानसिक कल्पना के आधार से इस कर्म को कर रहे हैं, लेकिन इसके पीछे हमारा स्वार्थ है, किंतु दोष हम मढ़ दे रहे हैं श्री राम पर।

आप अपने से सोचो कि दुनिया का, विश्व का इतना महानतम मानव, एक देवता ऐसा कर्म कर सकता है! हम सभी आज राम के जीवन चरित्र को देखकर उनसे कुछ ऐसा सीखें जिन्होंने पुत्र धर्म निभाया, पिता धर्म निभाया, पति धर्म निभाया, भ्राता धर्म निभाया, ऋषि मुनि तपस्वियों का मान रखा, सबको सम दृष्टि से देखा, त्याग की प्रतिमूर्ति बने, माता कैकयी के दोष लगाने पर भी उनका भाव और सम्मान कम न होना, उनको दोष न देकर अपने कर्म की भावी मानना और बड़ों की आज्ञा को सर्वोपरी रखना, यही तो जीवन चरित्र है। दिखाया गया है कि रावण दुश्मन है, फिर भी दस सिर वाले रावण अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, निंदा, घृणा, आलस्य और भय के बीच में रहते हुए उन्होंने इसको जीता। और उसके राज्य में रहने वाले जो परमात्मा को अपना मानते थे उनको राज्य भाग्य भी दिया।

तो हम सब आत्माओं की मानसिक दशा का वर्णन है, श्री राम का चरित्र। हम रह वैसे लंका जैसी नगरी में ही तो हैं जहाँ चारों तरफ विकारों का बोलबाला है। ऐसे विकारों के साम्राज्य में अगर हम परमात्मा राम के साथ रहना शुरु कर दें और श्री राम जैसा चरित्र भी साथ-साथ निभायें तो कुछ दिन में ही दशहरा यानी दस विकारों को हरा करके अपनी विजय पताका हम भी फहरा सकेंगे।

तो 'राम' आत्मा राम की कहानी है, जो है तो इस दुनिया में ही लेकिन सबके बीच में रहते हुए, सबको समाते हुए, सबको स्वीकार करना और उनके साथ चलना, यही आत्मा राम का जीवन चरित्र है जिसे चरितार्थ किया तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में। तो मैं क्यों न श्रीराम के चरित्र को मानसिक रूप से अपने अंदर उतारकर, विकारों को जीत कर नई दुनिया में जाने के लायक खुद को बनाऊं। तो ऐसा करने पर रामनवमी पर राम के जन्म के साथ हम आत्मा राम का भी नया जन्म हो जायेगा।

बहादुरगढ़ से.2-हरियाणा। राक्षाबंधन के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. विनीता बहन, ब्र.कु. रेनू बहन, ब्र.कु. अंजली बहन, ब्र.कु. रूबी बहन, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. इंदु बहन, ब्र.कु. संदीप भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर 101 फूल की लम्बी राखी बनाकर सभी ने आध्यात्मिक संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

डीडवाना-कुचामन(राज.)। जिला कलेक्टर सीताराम जाट को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनिता बहन व ब्र.कु. वसु बहन।

कोटा-वल्लभनगर(राज.)। दैनिक भास्कर के प्रमुख संपादक सर्वेश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

भुसावर-भरतपुर(राज.)। प्रसिद्ध कथा वाचिका देवी चित्र लेखा जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. संस्कृति बहन।

भादरा-राज.। न्यायाधीश आरएचजेएस अनिल लोहिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रकांता बहन।

चरखी दादरी-हरियाणा। अति. उपायुक्त डॉ. जयेंद्र सिंह, सीईओ प्रदीप कौशिक तथा एसडीएम नवीन कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रेमलता बहन तथा अन्य।

विश्वामित्र क्या हमारी कहानी नहीं है!

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

तुलसीदास कृत रामचरितमानस एवं वाल्मीकि कृत रामायण में एक चरित्र बड़ा ही प्रचलित है, जिसको विश्वामित्र नाम देते हैं और विश्वामित्र का जो सबसे बड़ा योगदान है, वो ये है कि वे ऋषि, मुनि, तपस्वियों के तप में, यज्ञ में विघ्न डालने वालों से बचाने के लिए श्री राम और श्री लक्ष्मण को वन में ले आये और उनके द्वारा उन्होंने उसका निवारण किया। अब क्या इस चीज़ को हम अपने दैनिक जीवन में नहीं अपना सकते! अपनाना है इसको लेकिन समझ के। अब आप देखो, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चार भाई थे लेकिन विश्वामित्र जी ने सिर्फ दो को ही चुना, श्री राम और श्री लक्ष्मण। अब हम रामायण में नहीं चले जायेंगे कि उस समय वो दोनों ननिहाल गये थे या कहीं और थे। इसमें हमें नहीं जाना है। हमें ये देखना है कि उन्होंने श्री राम और श्री लक्ष्मण को दशरथ जी से ये कहकर लिया कि मैं इन्हें वन में लेकर जा रहा हूँ ऋषि-मुनियों के विघ्न को खत्म करने के लिए। तो इसमें मर्म ये है कि आत्मा को राम(आत्मा राम) भी कहा जाता है। और आत्मा राम जब अपने लक्ष्य पर पूरी तरह केंद्रित हो जाती है तो उसको लेने के लिए विश्वामित्र आते हैं अर्थात् वो पूरे विश्व का मित्र बन जाता है।

आज पूरे साम्राज्य, पूरे संसार में हर तरफ एक चीज़ का बोलबाला है, वो ये कि कोई किसी को स्वीकार करने को राज़ी नहीं है, सब अपने आप को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट समझ कर ही चलते हैं। ऐसे समय में सभी लोग हमारे नज़दीक कब आयेंगे जब हमारे अंदर श्री राम की तरह धारणा या भावना हो। सबके लिए समान भाव, एक भाव। सब उस एक परमात्मा की संतान हैं, सब एक हैं। और सबके अंदर सिर्फ यही एक भाव रहे कि सभी को जीवन श्रेष्ठता के लिए मिला है, सभी को साथ लेकर चलने के लिए मिला है, अकेले रहने के लिए नहीं मिला है। जब ये भाव आयेगा तब जीवन में अनेकानेक बदलाव स्वतः आने लग जायेंगे।

इस विश्व में सबसे ज़्यादा हमें दुआओं की आवश्यकता है। क्यों आवश्यकता है, क्योंकि जीवन को आपने देखा होगा कि कितना उलझा हुआ है आज। हमारे पास सारी सुख-सुविधाएं हैं, सबकुछ है, फिर भी हम स्वयं को असुरक्षित और भ्रमित महसूस कर रहे हैं। क्यों ऐसा है, क्योंकि हम सबको अपना नहीं मानते। सबके लिए समान भाव नहीं रखते, सबको एक साथ लेकर नहीं चलते। क्या राम कथा को या राम के चरित्र को अपने जीवन के साथ जोड़कर कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि हम भी सभी के लिए सोचें! अब ऐसा हुआ या नहीं हुआ लेकिन उसे हम अपने जीवन में अगर उतारते हैं तो हम ज़रूर पूरे विश्व के मित्र बन जायेंगे अर्थात् हमारे चलने से, बोलने से, देखने से सबका उद्धार होने लग जायेगा, सबको कुछ प्राप्ति होने लग जायेगी। जैसे रामायण में दिखाते हैं कि राम, लक्ष्मण जिस रास्ते से गुज़र रहे थे, वहां की धरती, वहां का वातावरण, वहां के राक्षस, वहां के पत्थर सबमें परिवर्तन आता जा रहा था। लेकिन वो परिवर्तन तब आयेगा जब हम अपनी आत्मा के अंदर वो सारे गुण और विशेषताएं लेकर आयेंगे। तब विश्वामित्र बनेंगे माना राजा भी बनेंगे, ऋषि भी बनेंगे, सबके साथ रहेंगे और तपस्वी रूप से रहेंगे। तो ये जो चरित्र और चित्र बने इस दुनिया में, तो उसे चरितार्थ करने से ही हम उस चरित्र और चित्र के साथ न्याय कर सकेंगे और जीवन को आगे बढ़ा सकेंगे। तभी सभी हमें स्वीकार करेंगे और हम सभी को स्वीकार करेंगे। तो चलो, हम सभी बन जाते हैं अब विश्वामित्र।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मेरे पति व मेरी सास मुझे शुरु से ही पसंद नहीं करते थे। वे मुझसे बात-बात पर झगड़ा किया करते। उन्होंने अब मुझे घर से निकाल दिया है। कुछ समय से मैं अपने भाई के घर में रह रही हूँ। कुछ लोग मुझे वापस ससुराल चले जाने की सलाह दे रहे हैं और मुझे भी लग रहा है कि मुझे अपने ससुराल चले जाना चाहिए। कृपया मुझे बताएं कि मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : इससे पहले कि आप निर्णय लें तो नज़दीक के किसी ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान लें। राजयोग मेडिटेशन करें। अपने बारे में बहुत कुछ जानें। कर्मों की गुह्य गति के बारे में जानें तो आपका चित्त शांत हो। क्योंकि आपके मन में पति और सास के लिए डेफिनेटली निगेटिव फीलिंग्स भर गई होंगी कि उन्होंने शुरु से ही आपके साथ दुर्व्यवहार किया। तो पहले तो आप अपने चित्त को शांत करें। और उन दोनों को क्षमा कर दें। बहुत अच्छा होगा ताकि जो आपके मन में कटुता भर गई है; और आपके मन की कटुता सबसे पहले आपको कड़वा बना रही है। आपको ज़हरीला कर रही है, आपकी शांति को भंग कर रही है, आपके जीवन में जो बहुत सुख होना चाहिए था पारिवारिक, उसको नष्ट कर रही है। वो समाप्त हो जाये। और उन दोनों के प्रति क्षमाभाव, दोनों के प्रति शुभ भावना ले आयें।

जब आप ज्ञान-योग सीखेंगी तो आपको एक चीज़ सिखाई जायेगी कि ये सभी आत्मायें हैं और ये संसार एक विशाल नाटक है। सभी आत्मायें इसमें देह रूपी वस्त्र पहन कर अपना पार्ट प्ले कर रहे हैं। तो पति और सास भी दोनों आत्मायें हैं और अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। तो इस दृष्टि से आपके मन की कटुता समाप्त होगी। और मेरी तो राय ये है कि भाई के पास तो आप कब तक रहेंगी। किसी नारी को अपने ही घर में रहना शोभा देता है। समस्यायें तो हैं लेकिन अपनी शुभ भावनाओं से आप इनका हल कर सकती हैं। आपको वहीं जाना चाहिए। और महत्वपूर्ण बात ये है कि उन्हें बदलने के बजाय अपने को बदलना चाहिए क्योंकि जब मनुष्य के साथ ऐसा व्यवहार होता है तो मनुष्य अपने को नहीं देख पाता। समझते हैं कि ये दोनों मेरे शत्रु हैं, ये दोनों मेरे को कष्ट पहुंचा रहे हैं, मेरी जीवन के साथ खेल रहे हैं। मुझे बिल्कुल नष्ट कर देना चाहते हैं। तो आपकी अपनी निगेटिव भावनायें उनको पहुंचती हैं और उनका गलत व्यवहार भी बढ़ने लगता है। मैं आपको कहूंगा कि आप अपने को चेंज करें। अगर आपका कोई संस्कार ऐसा हो जो दूसरों को बुरा लगता हो, आपका बात करने का तरीका ऐसा हो जो दूसरों को भाता न हो, अगर ऐसा है तो उसको भी आप ठीक करें।

स्पिरिचुअलिटी का मैं एक अच्छा सिद्धान्त आपके लिए सुना देता हूँ। संसार में लोग कहते हैं हमें कोई भी प्यार नहीं करता। कई जगह ये समस्यायें ढूंढनी चाहिए कि कोई मुझे प्यार क्यों नहीं करता! प्यार तो हर मनुष्य के पास है, प्यार वो हर मनुष्य को देना भी चाहता है, पर यदि दूसरे लोग मुझे प्यार नहीं दे रहे तो कहीं न कहीं मेरी भी कुछ गड़बड़ है। इसका मैं एक बहुत सुन्दर समाधान कहूँगा। जो आत्मा स्वयं को देह से न्यारा अनुभव करती है उसे सबका प्यार अवश्य मिलता है। बहुत सुन्दर ये स्पिरिचुअल फिलॉसफी है। इसलिए आपके लिए राय है कि आप राजयोग मेडिटेशन सीख कर मैं आत्मा हूँ ये देह अलग है। मैं आत्मा हूँ, मैं तो पवित्र आत्मा हूँ, बिल्कुल शुद्ध हूँ। शक्तिशाली हूँ। मैं भी इस देह रूपी चोले को धारण करके इस नाटक में पार्ट प्ले कर रही हूँ। बिल्कुल मैं अलग, ये देह अलग। कुछ दिन आप ये अभ्यास करेंगी तो आपको अनुभव होगा जो लोग आपसे घृणा करते थे वो लोग आपसे प्यार करने लगेंगे, लेकिन आप मेडिटेशन की प्रैक्टिस करेंगी तो उनका विचार भी बदल जायेगा और आपको सम्मान सहित स्वीकार करेंगे।

प्रश्न : मैं जीन्द से शारदा कश्यप हूँ। मेरा बेटा इंजीनियरिंग का विद्यार्थी है। उसका दो पेपर में बैक आ गया है, अब वह घर में सारा दिन उदास बैठा रहता है। बहुत परेशान है कि मैं अपना पेपर कैसे क्लीयर करूंगा, कर पाऊंगा या नहीं। मेरा भविष्य क्या होगा। मैं बहुत समझाती हूँ कि सब ठीक हो जायेगा लेकिन वो समझ नहीं पा रहा है मुझे उसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : निश्चित रूप से ऐसे केसेज बच्चों के साथ होते हैं। और वो बच्चा बहुत उदास हो जाता है। कुछ बच्चे तो ऐसे हैं खुश मिजाज नेचर के होते हैं कि जो कुछ भी हुआ ठीक है, होना होगा हो जायेगा, छोड़ो कोई बात नहीं। लेकिन कुछ बच्चे बड़े सीरियस होते हैं जो हर चीज़ को सीरियसली देखते हैं। उनका एक साल बेकार जा रहा है ये क्या हो गया! तो उनके मन में उदासी आ जाती है। और माँ-बाप भी थोड़े परेशान हो जाते हैं और चाहते हैं कि हमारा बच्चा इससे निकल जाये। मनुष्य का जीवन महत्वपूर्ण है। मैं आपके बच्चे के लिए कहूँगा ये जीवन तो खेल है, इसे खेल मानें। बैक आई है तो कल सफलता हो जायेगी। पेपर क्लीयर हो जायेंगे। अपने मन पर उदासी की चादर जो उन्होंने डाल ली है उसको उतार फेंके और बिल्कुल उमंग-उत्साह और खुशी अपने मन में लायें। और फिर से तैयारी करें पूरे उमंग-उत्साह के साथ। सफलता होगी। मैं तो ये राय दूंगा कि कोई आपके आस-पास ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र हो तो वहाँ जाकर थोड़ा मेडिटेशन सीखें ताकि एकाग्रता बढ़े और जीवन में खुशी लौटे।

मेडिटेशन का सबसे अच्छा फायदा यही होता है कि एक मुर्दे समान बने व्यक्ति में भी नवजीवन का संचार करने लगता है। और वहाँ हमारे सेवाकेन्द्रों में बहुत सारे भाई-बहन आते हैं तो खुशी का माहौल इतना ज़्यादा होता है कि उदास व्यक्ति भी वहाँ आकर खुश हो जाता है। आपके बेटे को हर समय घर पर ही नहीं रहना चाहिए, उससे थोड़ा बाहर आये। कई बार ऐसा होता है कि निराशा के बहुत गर्त में चले जाते हैं, मेरे फ्रैंड्स मुझे क्या कहेंगे, लोग क्या कहेंगे शायद ये सब बातें सोच-सोच कर बहुत ज़्यादा परेशान हो रहा हो। लेकिन फिर बाहर तो निकलना ही है। घर पर कब तक रहेंगे। फ्रैंड्स से तो कभी न कभी मिलेगा ही। और फ्रैंड्स भी जानते हैं बहुतों की बैक आती है कोई बात नहीं। वो खुलेगा तो फ्रैंड्स भी बहुत अच्छी तरह इनके साथ मिले-जुले रहेंगे। तो और नहीं तो हमारे आश्रम पर जाये, वहाँ की खुशी का माहौल उनके अन्दर खुशी पैदा करेगा। और ये उदासीनता समाप्त हो जायेगी। क्योंकि उदासीनता तो उसकी ब्रेन की शक्तियों को नष्ट करती जायेगी। इसलिए उनको इस उदासी से बाहर आना ही है। इसलिए मैं आपको कहूँगा कि आप उसका साथ देती रहें। उनको प्रोत्साहित करती रहें। और उनको अपने साथ घूमने-फिरने पिकनिक पर ले जाया करें, बाज़ार में ले जाया करें। और आश्रम पर भी इसे अपने साथ ले जायें तो वो इससे बाहर आ जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

कोहिमा-नागालैंड। राज्यपाल ला.गणेशन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रूपा बहन तथा अन्य।

भुवनेश्वर-ओडिशा। राजभवन में राज्यपाल गणेशी लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन। इस मौके पर ब्र.कु. त्रिपुरा, ब्र.कु. स्मृति, ब्र.कु. कविता व ब्र.कु. आदित्य मौजूद रहे।

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। राज्यपाल कलराज मिश्र को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकला दीदी।

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

परमात्म स्मृतियों को...

साक्षात कर साक्षात्कार करायें

हम सभी परम आत्मा के साथ भारत को स्वर्णिम भारत बनाने के दिव्य और अलौकिक कार्य में कार्यरत हैं। सब जानते हैं कि युग बदलने का कार्य किसी मनुष्य के द्वारा सम्भव नहीं है। भारत को स्वर्णिम बनाने का काम केवल परमात्मा का है। हमारी सरकारें भले ही ये ड्रीम देखती हैं, बहुत अच्छा ये ड्रीम है। और वो बाह्य रूप से देश को आगे बढ़ा रही है और बढ़ा सकेगी। लेकिन जब तक मनुष्य देव तुल्य न बनें, जब तक मनुष्य के अन्दर प्युरिटी न आये, जब तक मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य न बन जाये उसके अन्दर छिपे मनोविकार- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, देष, तेरा-मेरा ये समाप्त न हो जायें तब तक बाह्य सुख-सुविधाओं का कोई ज़्यादा महत्त्व नहीं रह जाता।

इसलिए हम सभी को अपने को योग्य बनाकर इस संसार को स्वर्णिम संसार बनाना है। हम एक-एक शिव बाबा के बच्चे उसकी आज्ञाओं पर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाकर अनेक आत्माओं को श्रेष्ठ बनायेंगे। एक-एक राजयोगी सौ को, दस हज़ार को, कोई-कोई तो एक लाख को श्रेष्ठ बनायेंगे। और ये कलम लगते-लगते अनेकों में जो देवत्व छुपा हुआ है वो प्रकट होने लगेगा। उनके मनोविकार छूटने लगेंगे। ये आजतक होता आया है, ये कोई कल्पना नहीं है। भारत में जो गायन है 33 करोड़ देवी-देवता वो फिर से देवत्व को प्राप्त करेंगे। वो अभी मनुष्य रूप में हैं। वो पहले प्रजापिता ब्रह्मा की संतान बनेंगे और फिर मनुष्य देवता बनेंगे।

उनमें से भी जो पहले आठ हैं उनका सबसे ज़्यादा महत्त्व है। उनकी प्युरिटी संसार को बदलने में सक्षम है। उनकी दिव्यता, उनका मन पर कंट्रोल, वो प्रकृति के मालिक, वो साइलेंस पॉवर से सम्पन्न, वो ऐसी आत्मायें हैं। 108 में से मैं पहली-पहली 25 की बात करूं जिनके लिए बाबा ने कहा, 108 में पहले जो 25 रत्न यानी आत्मायें बहुत-बहुत महान हैं, बहुत बड़े योगी हैं, बहुत-बहुत पवित्र हैं। तो विचार कर लें कि जब ये 25 आत्मायें साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगी- साक्षात्कार कराने की चाबी तो शिव बाबा(भगवान) के पास है, मनुष्य के पास नहीं होती। जब साक्षात्कार शुरू होने लगेंगे तब लोग खींच-खींच कर, भाग-भाग कर आने लगेंगे। एक-एक दिन में एक-एक लाख, पाँच-पाँच लाख ब्राह्मण तैयार होने लगेंगे। न कोई ज्ञान की बहस करेगा। जो ज्ञान उन्हें दिया जायेगा उसे सत्य मानकर उसे अपने जीवन में धारण करने का पुरुषार्थ करेंगे।

> मुझे व्यर्थ को छोड़कर ज्ञान के चिंतन में रहना है। ज्ञान के चिंतन से ज्ञान का खज़ाना बढ़ता चलेगा। और ज्ञान के द्वारा मुझे अपने विचारों को, अपने संकल्पों को महान व श्रेष्ठ बनाते चलना है। मुझे योग की शक्ति से अपने को मोस्ट पॉवरफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाना है।

इसके साथ-साथ ये अष्ट रत्न, ये 25 आत्मायें या कुछ और 108, ये सर्व खज़ानों से सम्पन्न हो जायेंगी। याद रखना है- बाबा के महावाक्य, भगवान के वचन हैं, क्योंकि वो सबकुछ जानता है और ये उसकी प्लानिंग है कि इस युग को कैसे बदलना है, पुराने युग की कैसे समाप्ति करानी है। क्योंकि पाप बहुत बढ़ गया है। पापियों का जब तक अन्त न हो तो देवयुग भला कैसे आयेगा! तो आने वाले समय में दृष्टि के द्वारा सेवा होगी। जिनके पास ये सर्व ईश्वरीय खज़ाने होंगे,उनके वायब्रेशन्स, उनकी दृष्टि से जो तेज निकलेगा, उनके थोड़े-थोड़े वचन जो वरदानी बनकर प्रभाव डालेंगे उसके द्वारा सेवा की सम्पन्नता होगी।

तो साक्षात्कार किसी एक का हो जाये। मान लो, एक राजयोगिनी बहन के द्वारा लोगों को साक्षात्कार होने लगेंगे कि दुर्गा देवी तो ये है। तो समझ लें दुर्गा देवी के भक्त कितने हैं भारत में- करोड़ भी नहीं, असंख्य हैं। वो सभी भागे-भागे चले आयेंगे।

किसी से विष्णु के भी साक्षात्कार होंगे, किससे हनुमान के होंगे, किससे गणेश के होंगे, जो नौ देवियां हैं उनके अलग-अलग जगह पर साक्षात्कार होंगे। और ये सभी आत्मायें अष्ट शक्तियों से भरपूर होंगी।

कौन-कौन से हैं वो नौ खज़ाने- ज्ञान का खज़ाना, जो खज़ाना स्वयं भगवान ने दिया। दैवी गुणों का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, शक्ति ईश्वरीय शक्ति, श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना, खुशी का खज़ाना, दुआओं का खज़ाना, पुण्य कर्मों का खज़ाना, पवित्रता का खज़ाना, ये सभी हमारे खज़ाने हैं। स्वमान भी हमारे खज़ाने हैं। दुआएं देना और लेना ये भी हमारे खज़ाने हैं। तो ये खज़ाने भरपूर होंगे।

दुआ का एक शब्द बोलेंगे बस उनका उद्धार, उनका कल्याण हो जायेगा। पवित्रता के खज़ाने से सम्पन्न आत्मा एक दृष्टि देगी और कहेगी कि अब समय है ये पवित्र बनने का, अब ये सब विकार छोड़ दो, और आत्मायें विकारों का त्याग करने लगेंगी। तो ऐसा सुन्दर समय तेज़ी से हमारे समीप आता जा रहा है।

रूहानियत, स्पिरिचुअलिटी ही एक मात्र साधन है, ये सबकी समझ में आ जायेगा। हमें स्वयं को अध्यात्म से भरना है। सर्व खज़ानों से सम्पन्न होने का मुख्य संकल्प अभी अपने चित्त में सभी ले लें कि मुझे व्यर्थ को छोड़कर ज्ञान के चिंतन में रहना है। ज्ञान के चिंतन से ज्ञान का खज़ाना बढ़ता चलेगा। और ज्ञान के द्वारा मुझे अपने विचारों को, अपने संकल्पों को महान व श्रेष्ठ बनाते चलना है। मुझे योग की शक्ति से अपने को मोस्ट पॉवरफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाना है। तो शक्तियों के वायब्रेशन्स बहुतों का उद्धार करेंगे। अब साक्षात्कार हो रहा है वो समाचार छपने लगेंगे। दिखने लगेंगे तो लोग भागे आयेंगे, प्रिंट मीडिया में भी वो सब बातें छपने लगेंगी तो लोग भागे आने लगेंगे। तो हम सभी ऐसी महान सेवा के लिए अपने को तैयार करें। तो हम बाप समान रूप से भी प्रसिद्ध हो जायेंगे और संसार के उद्धारकर्ता भी बन जायेंगे।

गुवाहाटी-रूपनगर(असम)। राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कोरोबी बहन।

राँची-झारखण्ड। माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।

सोनीपत से.15-हरियाणा। कृषि राज्यमंत्री जे.पी. दलाल को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रमोद दीदी।

फतेहाबाद-हरियाणा। पूर्व विधायक बलवान सिंह दोलतपुरिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी बहन।

फाज़िल्का पंजाब। सादकी बॉर्डर पर 55 बटालियन के कंपनी कमांडर जे.के. सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रिया बहन। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

दिल्ली-वसंत विहार। डॉ. नितेन चंद्रा,लॉ सेक्रेट्री ऑफ इंडिया को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. क्षीरा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. विकास भाई व अन्य ब्र.कु. बहनें।

कायमगंज-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में यदुवंश कुमार वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष डॉ. शरद कुमार गंगवार, ब्लॉक प्रमुख अनुराधा दुबे आदि गणमान्य लोगों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मिथलेश बहन। इस मौके पर कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को दुर्व्यसनों और बुराइयों को छोड़ने का संकल्प कराया गया।

कला-संस्कृति प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन में शरीक हुए गुजरात के राज्यपाल

भौतिक विकास कभी भी सुख-शांति का आधार नहीं हो सकता - राज्यपाल देवव्रत

राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर से पहुंचे कलाकार, नाट्यकर्मी, कवि, गायक और संगीतकारों ने दी प्रस्तुति

शांतिवन। आज वैज्ञानिकों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन ने हमें चांद पर पहुंचा दिया। यह सब घटनाएं मानव के भौतिक विकास की परिचायक हैं। हमने बड़े-बड़े कारखाने, रेल पटरियां बनाई, लेकिन जब अध्यात्मवाद की बात आती है तो हम बहुत पीछे चल रहे हैं। उक्त विचार गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर स्थित डायमण्ड हॉल में आयोजित कला-संस्कृति प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भौतिकवाद और अध्यात्मवाद जब एक-दूसरे का सहायक बनता है तो वह पूर्णता की ओर बढ़ता है। ब्रह्माकुमारीज़ इन दोनों चिंतन को लेकर आगे बढ़ रहा है। हम आध्यात्मिक रूप से विकसित हुए बिना भौतिक साधनों का सदुपयोग नहीं कर पाएंगे। बिना अध्यात्म के विकास कभी भी सुख-शांति का आधार हो नहीं सकता है। एक महान साइंटिस्ट ने कहा था कि विज्ञान और अध्यात्म जब एक-दूसरे के पूरक बनते हैं तो वह इस परमात्मा द्वारा

बनाई गई सृष्टि का आनंद लेते हैं। आचार्य ने कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ये मानव के शत्रु हैं। असली विजय अंदर की विजय है।

कला-सस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं। परम कलाकार परमपिता शिव परमात्मा 87 वर्षों से विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। यहां 13 लाख से अधिक युवा, बड़े, बच्चे-बुजुर्ग इस कार्य में सहयोगी बने हुए हैं। आज से हम सभी खुद को एक महान आत्मा समझना शुरु कर दें। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि मन ही दुःख और सुख का कारण है। जो पॉज़िटिव सोचने वाला है तो वह हर बात को पॉज़िटिव रीति से सोचेगा और खुश रहेगा। वहीं जो नेगेटिव सोचने वाला होगा तो उसी बात को वो नेगेटिव सोचकर खराब करेगा। कार्यकारी सचिव ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि दुनिया में बहुत यूनिवर्सिटीज़ हैं, लेकिन विश्व में एकमात्र ब्रह्माकुमारीज़ स्पीरिचुअल यूनिवर्सिटी है। यहां मनुष्य से देवता बनने, सकारात्मक जीवन जीने की पढ़ाई पढ़ाई जाती है। गुजरात भावनगर से आईं ब्र.कु. तृप्ति बहन ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। कार्यक्रम का संचालन गामदेवी मुंबई की ज़ोनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. निहा बहन ने किया।

धीरे-धीरे मेरी सोच बदलने लगी - फिल्म अभिनेत्री मधु शाह,मुम्बई

मैंने जब आस्था चैनल पर राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शिवानी दीदी को सुना तो सुनते-सुनते धीरे-धीरे मेरी सोच बदलने लगी। उनकी क्लास से मैंने ये जाना कि हमें डेली लाइफ में कैसे थॉट्स रखने हैं जिससे सभी के साथ हमारे सम्बंध अच्छे रहें। दीदी को सुनकर मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी। यहां पर आना ही अपने आप में बड़ी अचीवमेंट है। यहां अपने आप मन मेडिटेशन में लगता है। यहां के पवित्र वायब्रेशन हमें फील होते हैं।

पुणे दैनिक सकाळ कार्यालय में...

'समाधान परक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर' संगोष्ठी

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर परियोजना के तहत एवं ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र के रजत जयंती वर्ष के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ एवं दैनिक सकाळ अखबार पुणे के सहयोग से 'समाधान परक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर भाई,संपादक,ओमशान्ति मीडिया,माउण्ट आबू ने पत्रकार भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पत्रकारिता को अध्यात्म की ज़रूरत है। पत्रकारिता समाज को आकार देने का काम करती है लेकिन समाज में दरार पैदा करने वाली खबरों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि सामाजिक दृष्टिकोण को परिपक्व करने के लिए पत्रकारिता करते समय आध्यात्मिकता को जोड़ने की आवश्यकता है। समाचार लिखते समय तनाव उत्पन्न न हो इसका ध्यान रखें। समाचार को अधिक रोचक बनाने के लिए समाचार को कोई रंग नहीं देना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि समाज की भलाई के लिए नैतिक रूप से कार्य करने वाले पत्रकारों की आज भी अत्यंत आवश्यकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. रोहिणी बहन ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का विस्तारपूर्वक परिचय देते हुए संस्थान के मीडिया विंग द्वारा हो रही सेवाओं की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में संपादक सम्राट फडणीस सर, अंकित काणे, गणेश लोखंडे, धनंजय बिजले सहित काफी पत्रकार भाई-बहनें व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सभी मीडिया कर्मियों को ईश्वरीय सौगात व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट की गई।

जी 20 के तहत वाई 20 कार्यक्रम का वाराणसी में समापन

- ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधियों को विशेष रूप में किया गया आमंत्रित
- जी 20 देशों के अनेक विशिष्ट युवा प्रतिनिधियों की रही सहभागिता

वाराणसी-उ.प्र.। जी 20 के तहत विशेष रूप से युवाओं के लिए आयोजित वाई 20 कार्यक्रम का समापन वाराणसी के रूद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर के विशाल ऑडिटोरियम में किया गया। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के मुख्य आतिथ्य के साथ केंद्रीय युवा एवं खेल मंत्री अनुराग ठाकुर तथा प्रदेश के माननीय मंत्रीगण स्वतंत्र देव सिंह, ए.के. शर्मा, रविन्द्र जायसवाल, अनिल राजभर, गिरीश चंद्र यादव आदि की उपस्थिति में कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम में आयोजन समिति के विशेष निमंत्रण पर ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, महादेवनगर,गुज., युवा प्रभाग की संयोजिका ब्र.कु. कृति दीदी एवं गुरूग्राम हरियाणा स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विधात्री बहन ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ की। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेंद्र दीदी, प्रबंधक ब्र.कु. दीपेंद्र भाई, मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन, ब्र.कु. विपिन भाई, ब्र.कु. राधिका बहन को भी युवा सशक्तिकरण के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए सादर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में देश के साथ जी 20 देशों के अनेक प्रतिभावान युवाओं की उत्साहजनक उपस्थिति रही। **कार्यक्रम के पश्चात् केंद्रीय खेल एवं युवा मंत्रालय के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने ब्रह्माकुमारीज़ के सारनाथ स्थित क्षेत्रीय मुख्यालय में निर्मित 'जीवनमूल्य आध्यात्मिक कला मंदिर' का अवलोकन कर संस्था द्वारा किए जा रहे युवा और मानव उत्थान के अभिनव कार्यों की प्रशंसा की।**

छोटे-छोटे परिवर्तन कर हम जी सकते हैं तनाव मुक्त जीवन

करेली-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपहार भवन सेवाकेन्द्र में नगर के सभी वर्गों के लिए आयोजित 'आध्यात्मिक स्नेह मिलन' कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन,मुम्बई द्वारा 'स्वस्थ तन, प्रसन्न मन, खुशनुमा जीवन' विषय पर विस्तार से समझाया गया कि कैसे हम ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग को अपनाकर और अपनी जीवनशैली में छोटे-छोटे परिवर्तन कर तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। प्रो. स्वामीनाथन ने कहा कि रिसर्च कहती है कि जब तक आप प्रसन्नचित्त नहीं होंगे तब तक आपके स्वस्थ रहने की संभावना

कम होगी। स्वस्थ तन के लिए एक स्वस्थ मन का होना अत्यंत आवश्यक है और स्वस्थ्य मन तब होगा जब हम अपनी आत्मा के 7 मुख्य गुणों ज्ञान, शान्ति, प्रेम, पवित्रता, सुख, शक्ति और आनंद से भरपूर होंगे, और भरपूर होने के लिए हमें ऊर्जा की आवश्यकता होती है जिसके लिए हमें मन-बुद्धि का सम्बंध परमात्मा से जोड़ना होता है और इसी मन-बुद्धि के सम्बंध को परमात्मा से जोड़ने को राजयोग कहा जाता है। राजयोगिनी ब्र.कु. कुसुम दीदी,जिला संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ नरसिंहपुर ने उपस्थित सभी अतिथियों को रक्षा सूत्र बांधकर ईश्वरीय सौगात भेंट की व शुभकामनाएं दी। इस दौरान ब्र.कु. गीता दीदी एवं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति मौजूद रहे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Sep, 2023
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org